राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय 3

ईश्वरीय वाचाएँ

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
राज्य और वाचाएँ 1
पुरातात्विक खोजें 2
बाइबल-आधारित विचार 4
वाचाओं का इतिहास : 6
सार्वभौमिक वाचाएँ 7
आदम 7
नूह 8
राष्ट्रीय वाचाएँ 9
अब्राहम 9
मूसा 11
दाऊद 11
नई वाचा 13
वाचाओं के प्रभाव 14
सार्वभौमिक वाचाएँ 15
आदम 16
नूह 17
राष्ट्रीय वाचाएँ 18
अब्राहम 18
मूसा 20
दाऊद 21
नई वाचा 21
वाचाओं के लोग 24
मनुष्यजाति के विभाजन 25
वाचाओं के भीतर 25
सम्मिलित किए गए और बाहर रखे गए 27
प्रभावों का वर्तमान प्रयोग 27
अविश्वासियों का बाहर रखा जाना 28
अविश्वासियों का सम्मिलित किया जाना 29
विश्वासियों का शामिल किया जाना 30
उपसंहार 32

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्याय तीन

ईश्वरीय वाचाएँ

परिचय

यदि आप प्राचीन संसार में एक महान राजा होते, और आप अन्य देशों पर अपना शासन फैलाने के लिए दृढ़ होते, तो आप अपने राज्य का संचालन कैसे करते? जैसे-जैसे आपका साम्राज्य बड़ा होता जाता तो आप उसकी बुनियादी नीतियाँ कैसे स्थापित करते? जब हम पुराने नियम का अध्ययन करते हैं तो ये पूछे जाने के लिए अच्छे प्रश्न हैं क्योंकि पुराना नियम परमेश्वर को सर्वोच्च ईश्वरीय राजा के रूप में प्रस्तुत करता है जो अपने राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने के लिए दृढ़-संकल्पी है। प्राचीन इस्राएली जानते थे कि उनके समय में महान मानवीय राजा अंतर्राष्ट्रीय संधियों या वाचाओं के द्वारा अपने बढ़ते हुए राज्यों पर शासन करते थे। इसलिए, यह जानकर उन्हें कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि परमेश्वर ने अपने बढ़ते हुए राज्य को वाचाओं के द्वारा भी संचालित किया। परमेश्वर की वाचाओं ने उन बुनियादी नीतियों की स्थापना की जिन्होंने उसके राज्य को संचालित किया जब यह पूरी पृथ्वी पर फैल गया।

यह हमारी श्रृंखला *राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन,* का तीसरा अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "ईश्वरीय वाचाएँ" रखा है। इस अध्याय में, हम यह अध्ययन करेंगे कि कैसे परमेश्वर ने पूरे संसार में अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिए वाचाओं की एक श्रृंखला के द्वारा अपने राज्य पर शासन किया।

जैसा कि हम इस श्रृंखला में सीख रहे हैं, पुराने नियम के कैनन की पुस्तकें विभिन्न समय और परिस्थितियों में परमेश्वर के लोगों को संबोधित करने के लिए लिखी गई थीं। फिर भी, प्रत्येक पुस्तक का दृष्टिकोण मान्यताओं के एक ऐसे समूह पर आधारित था जो पुराने नियम के सभी लेखकों में समान था। उन सभी का मानना था कि इतिहास में परमेश्वर का महान उद्देश्य स्वर्ग से पृथ्वी की छोर तक अपने राज्य का विस्तार करना था। और उनका यह भी मानना था कि परमेश्वर ने विभिन्न अवधियों में प्रमुख वाचाओं की एक श्रृंखला के द्वारा अपने राज्य के विस्तार को संचालित किया। वास्तव में, पुराने नियम के लेखकों ने अपनी पुस्तकें इसलिए लिखीं कि वे विभिन्न परिस्थितियों की चुनौतियों के सामने उसकी वाचा की नीतियों को लागू करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाएँ। और इसीलिए, पुराने नियम के प्रत्येक भाग के महत्व को समझने के लिए परमेश्वर की वाचाओं को समझना महत्वपूर्ण है।

पुराने नियम की ईश्वरीय वाचाओं का हमारा अध्ययन चार मुख्य भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच महत्वपूर्ण संबंधों की जाँच करेंगे। दूसरा, हम पुराने नियम में परमेश्वर की वाचाओं के इतिहास को देखेंगे। तीसरा, हम इन वाचाओं में जीवन के प्रभावों पर चर्चा करेंगे। और चौथा, हम परमेश्वर की वाचा के लोगों पर दृष्टि डालेंगे। आइए हम परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच महत्वपूर्ण संबंधों के साथ शुरू करें।

राज्य और वाचाएँ

पुराने नियम से परिचित हर कोई जानता है कि वाचा की अवधारणा इस्राएल के विश्वास के लिए महत्वपूर्ण थी। "वाचा" — इब्रानी में *बेरिथ* — के रूप में आम तौर पर अनूदित इब्रानी शब्द पुराने नियम में 280 से अधिक बार पाया जाता है। और वाचा की यह अवधारणा अक्सर अन्य शब्दों से भी जुड़ी होती है। पुराने नियम में वाचाओं के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन दुःख की बात है कि बहुत से

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लोग पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की वाचाओं की बुनियादी विशेषताओं को गलत रूप में समझते हैं। वे यह देखने में विफल रहते हैं कि कैसे परमेश्वर की वाचाएँ ईश्वरीय राजा के रूप में उसके शासन और पृथ्वी पर उसके राज्य के विकास से गहराई से जुड़ी हुई थीं। तो फिर ईश्वरीय वाचाओं का परमेश्वर के राज्य से क्या संबंध था? पुराने नियम की इन दो महत्वपूर्ण शिक्षाओं के बीच क्या संबंध है?

परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों और उसकी वाचाओं के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए हम दो दिशाओं में देखेंगे। सबसे पहले, हम हाल ही की कुछ पुरातात्विक खोजों का उल्लेख करेंगे जो इन संबंधों को समझने के लिए महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं। और दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे ये खोजें ईश्वरीय वाचाओं की बाइबल-आधारित अवधारणा में महत्वपूर्ण विचार प्रदान करती हैं। आइए हाल ही की कुछ पुरातात्विक खोजों से शुरु करें जो हमारे विषय पर प्रकाश डालती हैं।

पुरातात्विक खोजें

मसीह के अनुयायी सही रूप से पुष्टि करते हैं कि पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया और वे सब समय और स्थानों के लिए परमेश्वर के वचन हैं। लेकिन यह ध्यान में रखना हमेशा महत्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा ने सबसे पहले प्राचीन इस्राएलियों के लिए इस पवित्रशास्त्र को प्रेरित किया था। प्राचीन इस्राएलियों के सांस्कृतिक अनुभवों ने उनके लिए उनके समय में परमेश्वर के प्रकाशन को समझने के लिए मंच तैयार किया। और जैसा कि हम देखने वाले हैं, पिछली सदी के उत्तरार्ध में की गई कई पुरातात्विक खोजें हमें यह समझने में मदद करती हैं कि कैसे विश्वासयोग्य इस्राएलियों ने समझा कि परमेश्वर की वाचाओं और उसके राज्य के बीच बुनियादी संबंध थे।

प्राचीन मध्य पूर्व के तीन प्रकार के राजकीय प्रलेख अक्सर बाइबल-आधारित वाचाओं की चर्चाओं में दिखाई देते हैं : पहला, राजकीय समता संधियाँ — ऐसी संधियाँ जिनमें अपेक्षाकृत समान स्तर के राजा एक-दूसरे के साथ अपने संबंधों की शर्तों पर बातचीत करते थे; दूसरा, राजकीय अनुदान — ऐसे लेख जो बताते हैं कि कैसे प्राचीन राजा औपचारिक रूप से अपने वफादार सेवकों को भूमि या विशेष दर्जा प्रदान करते थे; और तीसरा, सुज़रेन-वासल संधियाँ और उनसे जुड़े अन्य प्रलेख — अंतर्राष्ट्रीय समझौते जो बड़े राजाओं ने छोटे, अधीनस्थ राजाओं और उनके राष्ट्रों के साथ स्थापित किए।

वास्तव में, हम बाइबल की ईश्वरीय वाचाओं के बारे में राजकीय समता संधियों से केवल कुछ विचार ही प्राप्त कर सकते हैं। निश्चित रूप से, पुराना नियम मनुष्यों को समान स्तर के बताता है जिन्होंने आपस में वाचाओं की शर्तों पर बातचीत की। लेकिन, *ईश्वरीय* वाचाओं के संबंध में, परमेश्वर ने कभी मनुष्यों के साथ बातचीत नहीं की क्योंकि कोई भी मनुष्य उसकी समानता में नहीं है। प्रत्येक उदाहरण में, उसने सर्वोच्च रूप से अपनी वाचाओं की सभी शर्तों को निर्धारित किया।

इसके अतिरिक्त, बाइबल के विद्वानों ने बाइबल में परमेश्वर की वाचाओं और राजकीय अनुदान के बीच कुछ महत्वपूर्ण समानताओं की ओर संकेत किया है। उन्होंने विशेष रूप से ऐसे संबंधों पर ध्यान दिया है जो प्रतिज्ञा के देश में इस्राएल के उत्तराधिकार और इस्राएल के राजवंश के रूप में दाऊद के घराने के परमेश्वर के चुनाव पर ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, इन समानताओं को अक्सर गलत रूप में समझा गया है।

अब तक, ऐसे प्राचीन राजकीय प्रलेख जिन्होंने बाइबल की ईश्वरीय वाचाओं के बारे में हमारी समझ को बढ़ाया है, वे सुज़रेन-वासल संधियाँ हैं। ये प्राचीन लेख इस बात में महत्वपूर्ण विचार प्रदान करते हैं कि बाइबल के लेखकों ने परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच के संबंध को कैसे समझा।

पुराने नियम के संसार में, मिस्र के फ़िरौन और हित्तियों, बेबीलोनियों, अश्शूरियों और यहाँ तक कि इस्राएल के राजाओं ने अक्सर कमजोर राज्यों को जीतकर या उन पर अधिकार करके अपने क्षेत्रों का विस्तार किया था। और जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने संधियों या वाचाओं के द्वारा अपने बढ़ते राज्यों

की मूलभूत नीतियों को स्थापित किया। पुरातत्वविदों ने इनमें से कई अंतर्राष्ट्रीय संधियों की खोज की है और उन्हें "सुज़रेन-वासल संधियाँ" कहा है।

अब, "सुज़रेन" और "वासल" शब्दों से आप भ्रमित न हो जाएँ। "सुज़रेन" का सीधा सा अर्थ एक सम्राट या एक बड़ा राजा होता है। और निस्संदेह, "वासल" शब्द का अर्थ सेवक है, या इस संदर्भ में, "बड़े राजा का सेवक।" सुज़रेन-वासल संधियों ने बुनियादी नीतियों की स्थापना की जिन्होंने बड़े राजाओं अर्थात् सुज़रेनों, और छोटे राजाओं अर्थात् वासलों तथा उनके राष्ट्रों के बीच बातचीत को संचालित किया। इस प्रकार, सुज़रेन-वासल संधि एक बड़े सम्राट और एक छोटे राजा और उसके राष्ट्र के बीच किया गया एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता था।

> प्राचीन मध्य पूर्वी संदर्भ में राजत्व... काफी हद तक वाचा की अवधारणा पर आधारित था। अतः हमारे पास संधियों, प्राचीन संधियों के प्रमाण हैं, जिसमें एक राजा, या एक अधिपति, या जिसे "सुज़रेन" कहा जाता है, वह कुछ लोगों के साथ एक समझौता करता था जो वास्तव में उसके सेवक या उसके वासल बन जाते थे। और वे संबंध को इस तरह परिभाषित करते हैं कि अधिपति अर्थात् सुज़रेन, शर्तों के एक समूह को परिभाषित करता है जिसके द्वारा संबंध को बनाए रखा जा सकता है। और वह कुछ इस तरह कहेगा : "मैं तुम्हें सुरक्षा प्रदान करूंगा; मैं तुम्हें समृद्धि प्रदान करूंगा; जब तुम अपनी फसलों का एक भाग मुझे दोगे, अपनी निष्ठा मुझे प्रदान करोगे, और अन्य राजाओं या अधिपतियों के साथ गठजोड़ नहीं करोगे, तो मैं अपने साथ तुम्हारी भागीदारी के बदले तुम्हें पहचान प्रदान करूंगा। और इसलिए, यह एक भाव में बहुत ही पारस्परिक प्रकार की परिस्थिति बन गई। और यदि हम इस तरह के समझौते की शर्तों में राजत्व और वाचा की प्रकृति के बारे में सोचना शुरू करते हैं, तो हम पाते हैं कि पुराने नियम के कई भाग इन सुज़रेन संधियों के सटीक तत्वों के साथ बहुत अधिक मेल खाते हैं।
>
> — डॉ. ब्रैडले टी. जॉनसन

सुज़रेन-वासल संधियों में आम तौर पर सात मुख्य बातें शामिल होती थीं। वे एक प्रस्तावना से शुरू हुईं जिसने महान राजा की पहचान की। इस प्रस्तावना के बाद एक ऐतिहासिक परिचय जिसने महान राजा के अपने वासलों के प्रति दयालु कार्यों पर ध्यान दिया। इसके बाद, ये संधियाँ विशिष्ट शर्तों या नियमों में बदल गईं जिनका पालन राजाओं ने अपने वासलों से चाहा। इन नियमों के बाद, आम तौर पर हर वर्ष सार्वजनिक रूप से इन संधियों के पढ़े जाने और नवीनीकरण के प्रावधान किए गए, और फिर ईश्वरीय गवाहों की सूचियाँ आईं जिन्होंने यह सुनिश्चित करने के लिए देवताओं से प्रार्थना की कि सभी जिम्मेदारियों को पूरा किया जा सके। ये संधियाँ फिर आज्ञाकारिता के बदले आशीषों और अनाज्ञाकारिता के बदले शापों में बदल गईं। और वे आम तौर पर एक औपचारिक, बलिदानी भोज के साथ समाप्त हुईं जिसने इन अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को औपचारिक रूप दिया।

पूरे पुराने नियम में इन सभी सात तत्वों और ईश्वरीय वाचाओं के बीच महत्वपूर्ण समानताएँ पाई जाती हैं। लेकिन इनमें से प्रत्येक तत्व के बारे में बात करने के बजाय, हम उन तरीकों पर ध्यान देंगे जिनमें बाइबल की वाचाएँ इन संधियों की महत्वपूर्ण बातों की समानता में हैं।

सुज़रेन-वासल संधियों के सात विशिष्ट तत्वों ने एक महत्वपूर्ण, त्रिरूपीय प्रभाव को प्रकट किया जिसने महान राजाओं और उनके वासलों के बीच के संबंधों को दर्शाया। सबसे पहले, इन संधियों ने राजकीय परोपकार पर जोर दिया, अर्थात् वह दयालुता जो महान राजाओं ने अपने वासलों के प्रति दिखाई। प्रस्तावना में, राजा स्वयं को अधिकारपूर्ण शासक के रूप में पहचानता है। फिर ऐतिहासिक परिचय में उन विशिष्ट तरीकों का वर्णन किया जाता है जिनमें राजा ने अपने वासलों पर दया दिखाई थी।

राजकीय परोपकार का विषय इतना प्रमुख था कि महान राजा अक्सर स्वयं को "पिता" और अपने वासलों को "पुत्र" कहते थे।

सुज़रेन-वासल संधियों का दूसरा प्रमुख केंद्र वासल की ओर से वफादारी की आवश्यकताओं पर था। वासलों को राजा के नियमों का पालन करना होता था और कीमती धातुओं, रत्नों, दासों, सैनिकों और उनकी फसल के कुछ भागों को भेंट के रूप में देना होता था। ये शर्तें रखी गईं ताकि वासल यह दिखा सकें कि वे अपने महान राजाओं के आभारी, वफादार सेवक थे।

सुज़रेन-वासल संधियों का तीसरा प्रमुख केंद्र आशीषों और शापों के परिणामों पर था। महान राजाओं ने हमेशा अपने राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आशीषों और शापों को देने का अपना राजकीय विशेषाधिकार सुरक्षित रखा। लेकिन सुज़रेन-वासल संधियों में, राजाओं ने उन आशीषों की घोषणा की जो उनके वफादार वासलों को मिलेंगी और उन शापों की चेतावनी दी जो विश्वासघाती वासलों को मिलेंगे।

जैसा कि हम देखेंगे, सुज़रेन-वासल संधियों की ये तीन मुख्य विशेषताएँ हमें पवित्रशास्त्र में परमेश्वर और उसके वाचाई लोगों के बीच के संबंधों के मूल प्रभावों को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद करती हैं।

इन पुरातात्विक खोजों को ध्यान में रखते हुए, हमें बाइबल के उन विचारों की ओर मुड़ना चाहिए जो वे हमें परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच के महत्वपूर्ण संबंधों के विषय में देते हैं।

बाइबल-आधारित विचार

हमें शुरू से ही उल्लेख करना चाहिए कि पुराने नियम में कई अलग-अलग संबंधों का वाचा के रूप में वर्णन किया गया है — जैसे मित्रों, जीवनसाथियों, राजनीतिक नेताओं, गोत्रों और राष्ट्रों के बीच का संबंध। इन मानवीय संबंधों को पुराने नियम में वाचाएँ कहा जाता था क्योंकि वे औपचारिक रूप से लोगों को पारस्परिक जिम्मेदारियों के साथ एक-दूसरे से बांधते थे। कभी-कभी, पुराना नियम इन विविध वाचाई संबंधों की तुलना परमेश्वर के अपने लोगों के साथ संबंधों से करता है। इसलिए, हम पुराने नियम की इन विभिन्न प्रकार की वाचाओं से परमेश्वर के साथ अपने संबंधों के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

लेकिन इस अध्याय में हमारा ध्यान इस बात पर है कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रमुख वाचाओं के बारे में क्या सिखाता है — उन वाचाओं के बारे में जिनके द्वारा उसने निर्णायक रूप से अपने राज्य का संचालन किया। यहाँ हमारे मन में बाइबल की छः जानी-पहचानी वाचाएँ हैं : आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा और भविष्य की वाचा जिसे हम अक्सर नई वाचा कहते हैं। इन सभी उदाहरणों में परमेश्वर ने अपने राज्य को वाचाओं के द्वारा चलाया।

हम इस अध्याय में बाद में इनमें से प्रत्येक प्रमुख ईश्वरीय वाचा को देखेंगे। लेकिन इस बिंदु पर, हम मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा को संक्षेप में देखने के द्वारा यह स्पष्ट करेंगे कि कैसे सुज़रेन-वासल संधियाँ हमें परमेश्वर की वाचाओं की प्रकृति के बारे में विचार प्रदान करती हैं। मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा को देखना महत्वपूर्ण है क्योंकि पवित्रशास्त्र पुराने नियम की किसी भी अन्य वाचा की तुलना में इस वाचा के बारे में अधिक बात करता है।

जब हम परमेश्वर द्वारा मूसा के साथ बाँधी गई वाचा को देखते हैं, तो यह तुरंत स्पष्ट हो जाता है कि इसे प्राचीन मध्य पूर्वी सुज़रेन-वासल संधियों के समान रूपों में रचा गया था। मूसा की वाचा में वही तीन तत्व शामिल थे जिन्हें हमने इन संधियों में देखा है। और यह समानता हमें यह समझने में सहायता करती है कि, मूलभूत भाव में, परमेश्वर अर्थात् इस्राएल के महान राजा ने अपने राज्य को संचालित करने के लिए अपनी वाचाएँ स्थापित कीं।

निर्गमन 19:4-6 पर विचार करें जहाँ परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इस्राएल जाति के साथ अपनी वाचा की शुरुआत की। परमेश्वर ने कहा :

> तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या–क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:4-6)।

यह अनुच्छेद सीनै पर्वत पर इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा का एक लंबा विवरण प्रस्तुत करता है जो निर्गमन 19-24 तक जाता है। ध्यान दें कि यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर द्वारा इस्राएल के साथ "वाचा" बाँधने को दर्शाता है और कि यह इस वाचा को उसके राज्य से जोड़ता है। जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, यह वाचा इस्राएल को "याजकों का राज्य" बनाने के द्वारा परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बाँधी गई थी।

इसी अनुच्छेद में, हम राजकीय परोपकार, वासल वफादारी और आशीषों और शापों के परिणामों की मूलभूत त्रिरूपीय विशेषता को भी देख सकते हैं जो सुज़रेन-वासल संधियों की विशेषता है।

सबसे पहले, परमेश्वर ने इस्राएलियों को उस ईश्वरीय उपकार की याद दिलाई जो उसने तब दिखाया जब उसने उन्हें मिस्र की गुलामी से आजाद कराया था। जैसा कि उसने पद 4 में कहा :

> तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या–क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ (निर्गमन 19:4)।

प्राचीन मानवीय राजाओं की तरह, परमेश्वर ने इस्राएलियों को याद दिलाया कि उसने उनके लिए बड़े-बड़े कार्य किए हैं। सीनै पर्वत पर अपनी वाचा के द्वारा उसने इस्राएल के साथ जो संबंध स्थापित किया था, उसके लिए उसका उपकार आवश्यक था।

दूसरा, परमेश्वर ने इस वाचा को बांधते समय मानवीय विश्वासयोग्यता की मांग भी रखी। पद 5 फिर से सुनें :

> इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे (निर्गमन 19:5)।

प्राचीन मध्य पूर्वी सुज़रेनों की तरह, परमेश्वर ने अपने राज्य के लोगों से विश्वासयोग्यता की मांग की। यद्यपि मूसा की वाचा परमेश्वर के राजकीय उपकार के द्वारा शुरू की गई और बनाई रखी गई, फिर भी परमेश्वर ने अपने लोगों से अपेक्षा की कि वे उसकी आवाज को सुनें और उसकी वाचा की शर्तों का पालन करें।

तीसरा, मूसा की वाचा के परिणाम भी इस्राएल पर आए। पद 5-6 में यह तत्व स्पष्ट हो जाता है :

> इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:5-6)।

इस्राएल के ईश्वरीय राजा के रूप में, परमेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि इस्राएली विश्वासयोग्य रहें, तो वे बड़ी आशीषों को प्राप्त करेंगे। वे अन्य सब जातियों में से उसका निज धन ठहरेंगे। वे परमेश्वर के याजकों का राज्य, एक पवित्र जाति बनेंगे। और जैसा कि निर्गमन 19-24 बार-बार दर्शाता है, यदि इस्राएली अविश्वासयोग्य रहते हैं, तो वे परमेश्वर के शापों के अधीन होंगे।

सुज़रेन-वासल संधियों और मूसा के दिनों में इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा के बीच इन महत्वपूर्ण समानताओं को नकारना मुश्किल होगा। लेकिन हाल के दशकों में, बाइबल के कई व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि बाइबल की कुछ अन्य प्रमुख वाचाएँ राजकीय अनुदानों के अधिक

समान हैं। उनके विचार में, राजकीय अनुदान में वफादारी की आवश्यकता और आशीषों तथा शापों के परिणाम शामिल नहीं थे। और इस प्रकाश में, इन व्याख्याकारों ने तर्क दिया है कि आदम और मूसा के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचाएँ सुज़रेन-वासल संधियों की तरह थीं; वे शर्तसहित, बाध्यकारी वाचाएँ थीं। लेकिन इस दृष्टिकोण से, नूह, अब्राहम और दाऊद से बाँधी परमेश्वर की वाचाएँ — और कुछ दृष्टिकोणों में यहाँ तक कि नई वाचा भी — राजकीय अनुदान की तरह थीं जो पूरी तरह से शर्तरहित, प्रतिज्ञायुक्त वाचाएँ थीं।

लेकिन बाइबल की कुछ वाचाओं को बाध्यकारी और कुछ को प्रतिज्ञायुक्त के रूप में देखना अपर्याप्त है। यह सच है कि राजकीय अनुदान के कुछ पुरातात्विक उदाहरण स्पष्ट रूप से विश्वासयोग्यता या आशीषों तथा शापों की आवश्यकता का उल्लेख नहीं करते। लेकिन कई विद्वानों ने बताया है कि उनमें से कई ऐसा *करते हैं।* और ये विद्वान यह भी सही रूप में मानते हैं कि प्राचीन मध्य पूर्व के राजाओं ने *हमेशा* अपनी प्रजा से आज्ञाकारिता की मांग की है। प्रत्येक ईश्वरीय वाचा ने राजा के रूप में परमेश्वर और उसके वासलों के रूप में उसके लोगों के बीच संबंध स्थापित किए। इसलिए, बाइबल का प्रत्येक अनुच्छेद जो परमेश्वर की वाचाओं को दर्शाता है, वह सीधे तौर पर ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और आशीषों तथा शाप के परिणामों को संबोधित करता है या उसका अनुमान लगाता है।

> कई बार बाइबल के विद्वानों ने सुझाव दिया है कि कुछ वाचाएँ प्रतिज्ञायुक्त होती हैं और अन्य बाध्यकारी होती हैं; कि जो देश अब्राहम को दिया गया वह प्रतिज्ञायुक्त वाचा है, और जो व्यवस्था सीनै पर्वत पर दी गई वह बाध्यकारी वाचा है। लेकिन वास्तव में, हम बाइबल में और प्राचीन मध्य पूर्व में जो देखते हैं वह यह है कि प्रत्येक वाचा के ये दोनों पहलू होते हैं। प्रतिज्ञाएँ की जा रही हैं, लेकिन साथ ही, यह संबंधों को जोड़ने और बनाए रखने की अपेक्षा से भी जुड़ा है। अतः हम इसे देश को देने की संधि में भी देखते हैं जहाँ परमेश्वर अब्राहम को देश देता है। उसके ठीक बाद, अध्याय 17 और अध्याय 18 में यह अपेक्षा है कि "तुम मेरी उपस्थिति में चलोगे, और अपने बच्चों को मेरे मार्ग सिखाओगे। तुम धार्मिकता और न्याय में चलोगे।" इस प्रकार, परमेश्वर अपनी वाचा में बड़े दान देता है, लेकिन महान राजा के प्रति प्रेम, निष्ठा, और भक्ति की अपेक्षा भी रखता है।
>
> — डॉ. ग्रेगोरी आर. पेरी

अब जबकि हमने परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं के बीच मूलभूत संबंध का परिचय दे दिया है, तो आइए इस अध्याय के अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ें : पुराने नियम में वाचाओं का इतिहास।

वाचाओं का इतिहास

पुराना नियम हमें ऐतिहासिक विवरण प्रदान करता है कि मसीह के देहधारण से पहले पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य कैसे विकसित हुआ। और इन वचनों से पता चलता है कि आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद के समय में, और फिर बाद में नई वाचा में परमेश्वर ने वाचाएँ बाँधने के लिए इतिहास में नाटकीय रूप से हस्तक्षेप किया। अब, इन सभी वाचाओं की रचना परमेश्वर के राज्य के विस्तार को संचालित करने के लिए की गई थी। लेकिन उन्होंने उन अलग-अलग नीतियों पर बल दिया जो इतिहास के विभिन्न चरणों में परमेश्वर के राज्य के लिए उपयुक्त थीं।

पुराने नियम में ईश्वरीय वाचाओं के इतिहास का वर्णन करने के कई तरीके हैं। लेकिन हम परमेश्वर की वाचाओं को तीन समूहों में विभाजित करेंगे : पहला, परमेश्वर की आरंभिक सार्वभौमिक वाचाएँ; दूसरा, इस्राएल के साथ उसकी राष्ट्रीय वाचाएँ; और तीसरा, नई वाचा — अर्थात् वह वाचा जिसकी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इतिहास के अंत में प्रकट होने की भविष्यवाणी की थी। आइए सबसे पहले सार्वभौमिक वाचाओं की ओर मुड़ें।

सार्वभौमिक वाचाएँ

जब हम आदम और नूह के साथ बाँधी वाचाओं को "सार्वभौमिक" कहते हैं, तो हमारे मन में यह होता है कि परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष लोगों के रूप में चुनने से पहले अति प्राचीन इतिहास में उन्हें संपूर्ण मनुष्यजाति के साथ बनाया था। इस भाव में, जब हम पूछते हैं, "परमेश्वर ने किस पर उपकार किया है? परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए कौन बाध्य है? उसकी आशीषों और शापों के परिणामों को कौन प्राप्त करता है?" तो उत्तर है : वह प्रत्येक व्यक्ति जो कभी जीवित रहा है। परमेश्वर के *सब* स्वरूप परमेश्वर के साथ वाचा में हैं क्योंकि वे आदम और नूह के साथ उसकी वाचा के द्वारा उससे जुड़े हुए हैं।

> अतः आदम और नूह के साथ बाँधी ये दो वाचाएँ मनुष्यजाति से अद्भुत प्रतिज्ञाएँ करती हैं। पहली यह कि परमेश्वर स्त्री की एक संतान, अर्थात् हव्वा के एक वंश को भेजेगा, एक मनुष्य को जो हमारा उद्धारकर्ता होगा; यह परमेश्वर-पुरुष यीशु मसीह है। और वह नूह से प्रतिज्ञा करता है कि संसार चाहे जितना भी दुष्ट हो जाए — और समय के साथ यह और अधिक दुष्ट होता जा रहा है — फिर भी वह इसे अब कभी किसी विनाशकारी जल-प्रलय या किसी प्राकृतिक आपदा से नष्ट नहीं करेगा जैसा कि उसने नूह के समय में किया था... इस प्रकार, आदम और नूह के साथ ये दो वाचाएँ... अब्राहम और मूसा और दाऊद के साथ बाँधी राष्ट्रीय वाचाओं की तुलना में संसार के उद्धार में और भी अधिक लोगों तथा परमेश्वर के और भी बड़े कार्य को दिखाती हैं।
>
> — डॉ. माइक रोस

हम इन सार्वभौमिक वाचाओं को ऐतिहासिक क्रम में देखेंगे, जिनकी शुरुआत आदम के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचा से होगी और फिर हम नूह के समय में उसकी वाचा की ओर बढ़ेंगे। आइए पहले आदम के साथ परमेश्वर की वाचा पर विचार करें।

आदम

आदम में मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर की वाचा का ऐतिहासिक विवरण उत्पत्ति 1-3 में पाया जाता है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, आदम पहला मनुष्य था, अतः हम मानवीय इतिहास के शुरुआती समय की बात कर रहे हैं। बिना किसी आश्चर्य के हम यह पाते हैं कि आदम की वाचा के बारे में बाइबल की शिक्षा परमेश्वर के साथ मानवीय संबंध के कुछ सबसे बुनियादी या मूलभूत आयामों पर केंद्रित है।

अब, हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि "वाचा" शब्द उत्पत्ति के पहले तीन अध्यायों में नहीं पाया जाता। और इसी कारण, कुछ मसीही इस बात से सहमत नहीं होते कि परमेश्वर ने आदम के साथ एक औपचारिक वाचा बाँधी थी। फिर भी, तीन ऐसे प्रमाण हैं जो मजबूती से दर्शाते हैं कि परमेश्वर ने सचमुच मनुष्यजाति के प्रतिनिधि के रूप में आदम के साथ अपनी पहली वाचा बाँधी थी।

सबसे पहले, जैसा कि हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, ईश्वरीय वाचाओं के मुख्य प्रभाव — उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता, और आशीषों तथा शापों के परिणाम — उत्पत्ति 1-3 में दिखाई देते हैं।

इस बात का दूसरा प्रमाण कि परमेश्वर ने आदम के साथ वाचा बाँधी थी, होशे 6:7 में पाया जाता है। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> उन लोगों ने आदम [या मनुष्यजाति] के समान वाचा को तोड़ दिया; उन्होंने वहाँ मुझ से विश्वासघात किया है (होशे 6:7)।

यह अनुच्छेद होशे के समय में परमेश्वर के विरुद्ध इस्राएल के विद्रोह की तुलना अदन की वाटिका में आदम के पाप से करता है। और यह बताता है कि कैसे इस्राएल ने परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया, या उसे तोड़ दिया, ठीक वैसे ही जैसे आदम ने अपने समय में किया था।

तीसरा प्रमाण कि परमेश्वर ने आदम के साथ एक वाचा बाँधी थी, उत्पत्ति 6:18 में पाया जाता है। यह बाइबल का पहला अनुच्छेद है जहाँ शब्द "वाचा" — या इब्रानी में *बेरीथ* (בְּרִית) — असल में पाया जाता है। यहाँ परमेश्वर ने नूह से इस प्रकार बात की :

> तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ (उत्पत्ति 6:18)।

यह अनुच्छेद महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वाचा बाँधने की सामान्य शब्दावली का प्रयोग नहीं करता। आम तौर पर, इब्रानी क्रिया *काराथ* (כָּרַת) — जिसका शाब्दिक अर्थ है "काटना" — का प्रयोग नई वाचा बाँधने का वर्णन करने के लिए किया जाता था। लेकिन यहाँ अनूदित शब्द "बाँधता हूँ" इब्रानी क्रिया *क्यूम* (קוּם) से है जिसका अर्थ है "पुष्टि करना" या उस वाचा को स्थापित करना जो पहले ही बाँधी जा चुकी है। जब परमेश्वर ने नूह से कहा कि वह उसके साथ अपनी वाचा स्थापित करने जा रहा है, तो उसका अर्थ था कि वह पहले से बंधी वाचा की पुष्टि करने जा रहा है — अर्थात् वह वाचा जो परमेश्वर ने पहले आदम के साथ बाँधी थी।

आदम के दिनों में परमेश्वर ने जो वाचा बाँधी, उसने मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर के संबंधों की सबसे बुनियादी विशेषताओं को संबोधित किया। इसी कारण, हम इसे परमेश्वर की "नींव की वाचा" कह सकते हैं। इस वाचा में, परमेश्वर ने सब मनुष्यों के लिए जीवन के मूलभूत तरीके निर्धारित किए। आदम और हव्वा को परमेश्वर के राजकीय और याजकीय स्वरूपों में सेवा करने और उसके राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाने के लिए नियुक्त किया गया था। परमेश्वर ने उनकी विश्वासयोग्यता की परीक्षा ली। और उसने आदम और हव्वा को, यदि वे उसकी आज्ञा मानते हैं तो बड़ी आशीषें देने का प्रस्ताव दिया। लेकिन उनके विश्वासघात के कारण उन पर ईश्वरीय शाप आए। संक्षेप में, आदम के साथ बाँधी गई वाचा ने उसके राज्य में हमारी भूमिका की नींव रखी।

आदम में परमेश्वर की वाचा के बाद, दूसरी सार्वभौमिक वाचा नूह के समय में परमेश्वर की वाचा है। इस वाचा के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, लेकिन हम केवल कुछ मुख्य विषयों पर बात करेंगे जो बाइबल के विवरण में सामने आते हैं।

नूह

नूह के साथ परमेश्वर की वाचा भी परमेश्वर के राज्य के अति प्राचीनकाल में स्थापित की गई थी और इसमें कुछ सबसे आधारभूत विषय शामिल थे जिनका सामना पूरी मनुष्यजाति करती है। नूह के साथ बाँधी वाचा का उल्लेख पहली बार उत्पत्ति 6 में जल-प्रलय से पहले, और फिर अध्याय 9 में जल-प्रलय के बाद किया गया है। सुनें कि उत्पत्ति 6:18 में परमेश्वर ने क्या कहा था :

> परन्तु तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ; इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री, और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना (उत्पत्ति 6:18)।

जल-प्रलय से पहले, परमेश्वर ने वाचा के द्वारा प्रतिज्ञा की कि यदि नूह जहाज को बनाने और जानवरों को जहाज में लाने की शर्तों को पूरा करता है, तो वह नूह और उसके परिवार की रक्षा करेगा।

जल-प्रलय के बाद, उत्पत्ति 9:9-11 में, हम नूह में परमेश्वर की वाचा के नवीनीकरण को देखते हैं। इस अनुच्छेद में परमेश्वर ने नूह से कहा :

> **मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पश्चात् जो तुम्हारा वंश होगा, उसके साथ भी वाचा बाँधता हूँ; और सब जीवित प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं... कि सब प्राणी फिर जल–प्रलय से नष्ट न होंगे (उत्पत्ति 9:9-11)।**

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, नूह के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचा केवल नूह और उसकी संतानों और जहाज में उपस्थित "सब जीवित प्राणियों" के साथ ही नहीं थी। परमेश्वर ने सुनिश्चित किया कि "*सब* प्राणी फिर जल–प्रलय से नष्ट न होंगे।"

परमेश्वर के विरुद्ध मनुष्यजाति के विद्रोह के कारण जब परमेश्वर अपने दंड का बड़ा जल-प्रलय लेकर आया तो उसके बाद परमेश्वर ने नूह के साथ अपनी वाचा बाँधी। लेकिन जलप्रलय के बाद, नूह के साथ परमेश्वर की वाचा ने रची गई व्यवस्था की स्थिरता सुनिश्चित की। और इसी कारण, हम इसे परमेश्वर की "स्थिरता की वाचा" कह सकते हैं। जब नूह और उसका परिवार जहाज से निकल गए, तो परमेश्वर ने पाप के प्रति मनुष्यजाति के झुकाव को स्वीकार किया। और वाचा के द्वारा, उसने एक दीर्घकालिक रणनीति स्थापित की ताकि पापी मनुष्य उसके राज्य के उद्देश्यों को पूरा कर सकें। जैसा कि हम उत्पत्ति 8:21-22 में पढ़ते हैं :

> **यहोवा ने कहा, "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा। अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे" (उत्पत्ति 8:21-22)।**

अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिए, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि प्रकृति स्थिर रहेगी ताकि पापी मनुष्यों को उसके प्रति अपनी सेवा पूरी करने का अवसर मिल सके। आदम के साथ बाँधी गई वाचा की तरह इस सार्वभौमिक वाचा ने राज्य की बुनियादी नीतियों की स्थापना की जो आज भी सब समयों में सब स्थानों के सब लोगों पर लागू होती हैं।

जैसा कि हमने अभी देखा, परमेश्वर की प्रमुख वाचाओं का इतिहास आदम और नूह के साथ बाँधी सार्वभौमिक वाचाओं के साथ शुरू हुआ। अब, हमें अपना ध्यान राष्ट्रीय वाचाओं की ओर लगाना चाहिए — अर्थात् वे वाचाएँ जो परमेश्वर ने तब बाँधीं जब पुराने नियम का इस्राएल राज्य के अपने उद्देश्यों के केंद्र में आ गया था।

राष्ट्रीय वाचाएँ

हम राष्ट्रीय वाचाओं को भी ऐतिहासिक क्रम में देखेंगे, जिनकी शुरुआत अब्राहम के साथ बाँधी वाचा से होगी, और फिर मूसा में इस्राएल के साथ वाचा और अंत में दाऊद के साथ वाचा। आइए अब्राहम से बाँधी परमेश्वर की वाचा से शुरु करें।

अब्राहम

अब्राहम प्रत्येक इस्राएली का कुलपिता या पिता था। और इसी कारण, परमेश्वर ने अब्राहम के द्वारा अपनी पहली राष्ट्रीय वाचा बाँधी। इस वाचा का प्रत्यक्ष उल्लेख हमें उत्पत्ति 15, 17 में मिलता है। अब्राहम — या "अब्राम" जैसा कि उसे तब कहा जाता था — के साथ परमेश्वर की वाचा का पहला उल्लेख उत्पत्ति 15:18 में पाया जाता है :

> इसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी (उत्पत्ति 15:18)।

इब्रानी शब्द काराथ (כָּרַת) का प्रयोग करते हुए यहाँ इस अभिव्यक्ति "वाचा बाँधी" का शाब्दिक अर्थ "वाचा काटी" है। जैसा कि हमने पहले बताया, यह एक वाचाई संबंध के आरंभ को दर्शाने का सामान्य तरीका था। फिर, कई वर्षों के बाद, परमेश्वर ने कुलपिता के साथ अपनी वाचा की पुष्टि की या उसे नया बनाया। उत्पत्ति 17:1-2 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा। मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा (उत्पत्ति 17:1-2)।

यह अब्राहम के साथ दूसरी, कोई अलग वाचा नहीं है। बल्कि, परमेश्वर ने कहा कि वह अपने और अब्राहम के बीच अपनी वाचा की "पुष्टि" करेगा। शब्द "बाँधूँगा" या पुष्टि करूँगा इब्रानी क्रिया *क्यूम* (קוּם) का अनुवाद है। यह वही अभिव्यक्ति है जिसे हमने उत्पत्ति 6:18 में देखा था जब परमेश्वर ने नूह के साथ अपनी वाचा में आदम के साथ की गई वाचा को स्थापित, या अभिपुष्ट किया।

> परमेश्वर जब भी इसके बारे में बात करता है, वह "अब्राहम के साथ मेरी वाचा" की बात करता है। वह कभी एक से अधिक का उल्लेख नहीं करता। और वह इसका उल्लेख भी कर सकता है — जब वह इसहाक और याकूब के साथ उस वाचा की पुष्टि कर रहा है — उदाहरण के लिए, वह "जो शपथ मैंने अब्राहम से खाई" का उल्लेख कर सकता है जो पूरी वाचा के लिए कार्यरत है, और इसमें उत्पत्ति 12, 15, 17 और 22 में की गई सभी प्रतिज्ञाएँ शामिल हैं। और पतरस पिन्तेकुस्त पर ऐसी ही टिप्पणियाँ करता है। और इसलिए, बाइबल का दृष्टिकोण इस पर यह है, जिस तरह से बाइबल इसे दर्शाती है, उससे कोई कभी नहीं सोचेगा कि एक से अधिक वाचाएँ हैं...मुझे लगता है कि कोई भी अन्य व्याख्या, फिर थोड़ी बाध्यकारी बन जाती है क्योंकि सभी प्रमाण स्वाभाविक रूप से इस समझ को प्रस्तुत करते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम के साथ केवल एक वाचा बाँधी थी।
>
> — डॉ. जेफ्री जे. नीहौस

अब्राहम के साथ बाँधी वाचा ने उसके वंशजों को बाकी मनुष्यजाति से अलग कर दिया। इस वाचा के द्वारा, परमेश्वर ने इस्राएल को चुन लिया कि वह उसके राज्य को पूरे विश्व में फैलाने में अग्रणी भूमिका निभाए। अब्राहम के वंशज प्रतिज्ञा के देश के अधिकारी होंगे। वे संख्या में बढ़ेंगे। और वे परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाएँगे। और इस कारण, अब्राहम की वाचा का वर्णन इस्राएल के प्रति परमेश्वर की प्रतिज्ञा की वाचा और उसकी "इस्राएल के चुनाव की वाचा" दोनों के रूप में किया जा सकता है। जैसा कि हम उत्पत्ति 15:18 में पढ़ते हैं :

> इसी दिन यहोवा ने अब्राम के साथ यह वाचा बाँधी, "[यह] देश मैं ने तेरे वंश को दिया है" (उत्पत्ति 15:18)।

और उत्पत्ति 17:2 में :

> मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊँगा (उत्पत्ति 17:2)।

अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा ने उसके चुने हुए लोगों के रूप में इस्राएल के लिए परमेश्वर के राज्य के उद्देश्यों को स्थापित किया।

अब्राहम के साथ अपनी वाचा बाँधने के बाद, परमेश्वर ने एक और राष्ट्रीय वाचा बाँधी — मूसा में इस्राएल के साथ वाचा।

मूसा

यह जानना महत्वपूर्ण है कि मूसा के समय में इस्राएल की वाचा अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के विपरीत नहीं थी। मूसा ने स्वयं को अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा का विकल्प प्रदान करने के रूप में नहीं देखा। इसके विपरीत, मूसा बार-बार राज्य के अपने कार्य के आधार के रूप में अब्राहम के साथ बाँधी वाचा की ओर मुड़ा। सुनिए किस प्रकार निर्गमन 32:13 में मूसा ने संपूर्ण जाति की ओर से परमेश्वर से विनती की :

> अपने दास अब्राहम, इसहाक, और याकूब को स्मरण कर जिनसे तू ने अपनी ही शपथ खाकर यह कहा था, "मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के तुल्य बहुत करूँगा, और यह सारा देश जिसकी मैं ने चर्चा की है तुम्हारे वंश को दूँगा कि वे उसके अधिकारी सदैव बने रहें" (निर्गमन 32:13)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, मूसा के साथ बाँधी राष्ट्रीय वाचा कोई नई वाचा नहीं थी जिसने अब्राहम के साथ बाँधी वाचा का स्थान ले लिया हो। बल्कि, यह चुनाव की उस वाचा पर निर्मित थी और इसने उसे आगे बढ़ाया जो परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधी थी।

हम निर्गमन 19-24 में मूसा के समय में परमेश्वर द्वारा इस्राएल के साथ वाचा बाँधने के प्राथमिक विवरण को पाते हैं। हम व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में निर्गमन की दूसरी पीढ़ी के साथ इस वाचा के नवीनीकरण को भी पाते हैं। जब परमेश्वर ने इस्राएल के बारह गोत्रों को सीनै पर्वत के नीचे इकट्ठा किया, तो उसने उन्हें एक बड़े राष्ट्र, राजनीतिक रूप से एकीकृत लोगों में बदला। निस्संदेह, मूसा के समय से पहले भी परमेश्वर के लोगों के लिए नियम और कानून थे। लेकिन हर नए राष्ट्र की तरह, इस समय इस्राएल की मुख्य जरूरतों में से एक नियमों की एक प्रणाली, अर्थात् उनका संचालन करने के लिए नियमों के एक समूह की जरूरत थी। इस कारण, मूसा के साथ बाँधी वाचा को उचित रूप से परमेश्वर की "व्यवस्था की वाचा" कहा जा सकता है। वास्तव में, मूसा की वाचा ने व्यवस्था पर इतना जोर दिया कि जब इस्राएल के लोगों ने इस वाचा में प्रवेश किया, तो उन्होंने परमेश्वर की संपूर्ण व्यवस्था का पालन करने के प्रति बड़ा समर्पण दर्शाया। निर्गमन 19:7-8 में हमें बताया गया है :

> तब मूसा ने... ये सब बातें, जिनके कहने की आज्ञा यहोवा ने उसे दी थी, उनको समझा दीं। और सब लोग मिलकर बोल उठे, "जो कुछ यहोवा ने कहा है वह सब हम नित करेंगे" (निर्गमन 19:7-8)।

अतः हम देखते हैं कि इस्राएल जाति के साथ बाँधी दूसरी वाचा मूसा के साथ बाँधी वाचा थी, वह वाचा जिसमें इस बात पर बल दिया गया कि इस समय उन्हें किस बात की जरूरत थी, अर्थात् परमेश्वर की व्यवस्था की।

अब, अब्राहम और मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा को देखने के बाद, हमें पुराने नियम में इस्राएल की अंतिम राष्ट्रीय वाचा की ओर मुड़ना चाहिए।

दाऊद

जब इस्राएल एक संपूर्ण राज्य बन गया तो परमेश्वर ने राजा दाऊद के साथ वाचा बाँधी। दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा सीनै पर्वत पर परमेश्वर की वाचा के विपरीत नहीं थी। बल्कि, यह मूसा के साथ बाँधी वाचा पर निर्मित थी और इसने उसे आगे बढ़ाया। जैसा कि सुलैमान ने 2 इतिहास 6:16 में स्पष्ट

किया, दाऊद से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ मूसा की व्यवस्था के प्रति विश्वासयोग्यता पर निर्भर थीं। जैसा कि हम पढ़ते हैं :

> इसलिये अब हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा, इस वचन को भी पूरा कर, जो तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद को दिया था, "तेरे कुल में मेरे सामने इस्राएल की गद्दी पर विराजनेवाले सदा बने रहेंगे, यह हो कि जैसे तू अपने को मेरे सम्मुख जानकर चलता रहा, वैसे ही तेरे वंश के लोग अपनी चाल चलन में ऐसी चौकसी करें, कि मेरी व्यवस्था पर चलें" (2 इतिहास 6:16)।

जैसा कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा ने दाऊद के राजकीय घराने पर ध्यान दिया, लेकिन दाऊद के घराने को भी [परमेश्वर की] व्यवस्था, अर्थात् मूसा की व्यवस्था पर चलना था।

आम तौर पर, बाइबल के व्याख्याकार सुझाव देते हैं कि परमेश्वर ने यह वाचा 2 शमूएल 7 में दाऊद के शासन के चरमबिंदु पर बाँधी थी। यद्यपि इस अध्याय में "वाचा" शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, फिर भी कई अनुच्छेद स्पष्ट रूप से इस बात का उल्लेख करते हैं कि परमेश्वर ने दाऊद के साथ एक वाचा बाँधी थी। केवल एक उदाहरण के रूप में, भजन 89:3-4 में दाऊद से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को सुनें :

> मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है, मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, "मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा" (भजन 89:3-4)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, दाऊद की वाचा ने इस्राएल में राजत्व पर ध्यान केंद्रित किया। या अधिक विशिष्ट रूप से कहें तो, इसने दाऊद के घराने को इस्राएल की "सभी पीढ़ियों के लिए" एक स्थायी राजवंश के रूप में स्थापित किया।

> 2 शमूएल 7 में दाऊद से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा छुटकारे के इतिहास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह सामान्य रूप में छुटकारे के इतिहास को समझने में एक महत्वपूर्ण अध्याय है... इस अध्याय में हम वह देखते हैं जिसे दाऊदवंशी वाचा कहा जाता है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण वाचा है जिसमें हम उद्धारकर्ता पर एक नए दृष्टिकोण को देखते हैं, कि यह उद्धारकर्ता दाऊद का पुत्र होगा। शब्द "दाऊद का पुत्र" पवित्रशास्त्र में कोई सामान्य शब्द नहीं है। हर बार जब आप "दाऊद का पुत्र" देखते हैं, तो "राजा" शब्द को याद रखना आवश्यक है। दाऊद राजा था, और इस अध्याय में यहोवा ने उससे प्रतिज्ञा की कि उसका पुत्र सिंहासन पर — अर्थात् राज्य के सिंहासन पर — सदा-सर्वदा के लिए बैठेगा। दाऊद की संतानों में से एक दाऊद के सिंहासन पर हमेशा के लिए राजा होगा।
>
> — श्री शेरिफ अतेफ फहीम, अनुवाद

जब दाऊद परमेश्वर के लोगों पर राजा बना, तो परमेश्वर ने दाऊद के घराने को उस वंश के रूप में स्थापित करने के द्वारा उसके राज्य को आगे बढ़ाया जो इस्राएल पर सदैव शासन करेगा। उस समय से, दाऊद के घराने के विश्वासयोग्य शासन के द्वारा ही इस्राएल पृथ्वी की छोर तक परमेश्वर के राज्य को फैलाने में अपनी भूमिका को पूरा करेगा। इस कारण, हम दाऊद की वाचा को परमेश्वर की "राजत्व की वाचा" कह सकते हैं।

अब जब हमने देख लिया है कि कैसे परमेश्वर की वाचाओं के इतिहास में सार्वभौमिक और राष्ट्रीय वाचाएँ शामिल हैं, तो हमें नई वाचा को देखना चाहिए, अर्थात् वह वाचा जिसके बारे में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर अपने राज्य के अंतिम चरण के दौरान इसे बाँधेगा।

नई वाचा

अधिकांश सुसमाचारिक मसीही इस बात से परिचित हैं कि पवित्रशास्त्र नई वाचा के बारे में क्या सिखाते हैं क्योंकि यह नए नियम की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण विषय है। लेकिन अक्सर, हम यह समझने में असफल रहते हैं कि नया नियम हमें नई वाचा के बारे में जो बताता है, वह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा नई वाचा के बारे में कही गई बातों में निहित है। उनके दृष्टिकोण से, नई वाचा बाइबल की प्रत्येक पिछली वाचा की पूर्णता है। और यह दर्शाता है कि जब अंत के दिनों में मसीहा के द्वारा उसके राज्य के उद्देश्य पूरे होंगे तो परमेश्वर अपने राज्य का संचालन कैसे करेगा।

कई भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि उनके निर्वासन के समाप्त होने के बाद परमेश्वर इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के विश्वासयोग्य बचे हुए लोगों के साथ एक वाचा बाँधेगा। और उस समय, परमेश्वर का राज्य मसीहा के द्वारा पृथ्वी की छोर तक फैल जाएगा। सुनें कि कैसे यिर्मयाह 31:31 "नई वाचा" के बारे में बात करता है :

> **सुन, ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा (यिर्मयाह 31:31)।**

यहेजकेल 37:26 में, और कई अन्य अवसरों पर, भविष्यवक्ता यहेजकेल ने इसी वाचा को सदा की "शांति की वाचा" कहा। जैसा कि हम पढ़ते हैं :

> **मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बाँधूँगा; वह सदा की वाचा ठहरेगी; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊँगा, और उनके बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाए रखूँगा (यहेजकेल 37:26)।**

और, जैसा कि सभी मसीही जानते हैं, 1 कुरिन्थियों 11:25 में पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि शांति की यह सदा की नई वाचा मसीह में पूरी हुई जब उसने कुरिन्थुस के लोगों को प्रभु भोज में यीशु के वचन की याद दिलाई :

> **यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है : जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो (1 कुरिन्थियों 11:25)।**

मसीह में इस नई वाचा के द्वारा, परमेश्वर नए नियम के युग में अपने राज्य का संचालन करता है। नई वाचा परमेश्वर के लोगों को चलाती है क्योंकि मसीह वह सब पूरा करता है जो परमेश्वर ने अपनी पिछली वाचाओं में पूरा किया था। और इस कारण, इसे परमेश्वर की "पूर्णता की वाचा" कहना उचित होगा।

पूर्णता की इस वाचा का उद्देश्य परमेश्वर के लोगों का संचालन करना था जब उसने उनका निर्वासन समाप्त किया और अपने राज्य को पृथ्वी की छोर तक फैलाया। नई वाचा परमेश्वर के लोगों को एक क्षमा-प्राप्त और छुटकारा पाई जाति में बदलने का परमेश्वर का समर्पण है जो बिना किसी असफलता के उसकी सेवा करने के लिए पूरी तरह से समर्थ है। सुनिए कैसे यिर्मयाह 31:31-34 में यिर्मयाह ने इस छुटकारे का वर्णन किया है :

> ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा... मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा। और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह 31:31-34)।

अब, हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि मसीह परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण को तीन चरणों में पूरा करता है। उसने अपनी पृथ्वी पर की सेवकाई, पवित्र आत्मा के उंडेले जाने और अपने प्रेरितों के कार्य के द्वारा इसे शुरू किया। यह पूरे कलीसिया इतिहास में निरंतर जारी है। और जब मसीह का महिमा में पुनरागमन होगा तो यह अपनी पूर्णता तक पहुँचेगा। उस दिन, नई वाचा परमेश्वर की वाचाओं के संपूर्ण इतिहास की पूर्णता होगी। यह आदम, नूह, अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बाँधी वाचाओं के पीछे परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करेगी।

> इब्रानियों 8 नई वाचा की स्थापना के बारे में बात करता है, और यह बिल्कुल नई वाचा नहीं है। इस वाचा की प्रतिज्ञा पुराने नियम में की गई थी। वास्तव में, वह यिर्मयाह 31 से उद्धृत करता है, जो एक नई वाचा की प्रतिज्ञा है। परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इस्राएल के साथ एक वाचा बाँधी, लेकिन उसने प्रतिज्ञा की कि एक दिन इस्राएल जब उस वाचा को तोड़ देगा तो परमेश्वर एक नई वाचा को फिर से स्थापित करेगा, और उस नई वाचा में व्यवस्था पत्थर की पट्टियाओं पर लिखी हुई नहीं होगी। इसमें व्यवस्था हमारे हृदयों पर लिखी हुई होगी... अतः यिर्मयाह 31 की नई वाचा की प्रतिज्ञा पूरी हो गई है, और लेखक यही तर्क दे रहा है। और पूर्णता की उस प्रतिज्ञा के साथ, परमेश्वर का उद्धार अब केवल इस्राएल के लिए नहीं है, बल्कि यह हर जगह की सब जातियों तक पहुँच रहा है। इस प्रकार, लेखक कहता है कि यही परमेश्वर का उद्देश्य रहा है, प्रतिज्ञाओं की पूर्णता यही है।
>
> — डॉ. मार्क एल. स्ट्रॉस

परमेश्वर के राज्य और वाचाओं के बीच संबंधों को तथा इस बात को देखने के बाद कि कैसे परमेश्वर ने अपनी वाचाओं के इतिहास में अपने राज्य को आगे बढ़ाया, हमें अपने तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए : वाचाओं के प्रभाव।

वाचाओं के प्रभाव

जैसा कि हमने इस अध्याय में पहले देखा, कुछ व्याख्याकारों ने इस बात से इनकार किया है कि ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता, और आशीषों तथा शापों के परिणामों के मूल प्रभाव ईश्वरीय वाचाओं में प्रकट होते हैं। यह सच है कि पुराने नियम की प्रत्येक वाचा के बाइबल-आधारित विवरण में विशिष्ट महत्व हैं। फिर भी, जब हम पुराने नियम के इतिहास के व्यापक बाइबल-आधारित चित्रण को देखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि अपने लोगों के साथ परमेश्वर के संबंधों के प्रभाव प्रत्येक वाचा के संचालन के तहत सुसंगत रहे।

आदम की वाचा ने संसार की शुरुआत में स्थापित कुछ मूलभूत तरीकों पर बल दिया। नूह की वाचा ने प्रकृति की स्थिरता पर बल दिया। अब्राहम की वाचा ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और चुनाव पर बल दिया। मूसा की वाचा ने परमेश्वर की व्यवस्था पर बल दिया। दाऊद की वाचा ने परमेश्वर के विशेष रूप से चुने गए राजकीय परिवार के रूप में दाऊद के राजवंश को दर्शाया। और नई वाचा ने पूर्णता पर बल दिया।

लेकिन ये महत्व वाचाई जीवन के व्यापक विवरण नहीं हैं; वे केवल कुछ मुख्य बिंदुओं पर ध्यान देते हैं। वाचा में जीवन जीने के महत्व के पूरे चित्रण को देखने के लिए हमें यह पहचानना चाहिए कि परमेश्वर के साथ वाचा के जीवन में इन महत्वों से कहीं अधिक बातें शामिल हैं। परमेश्वर के साथ वाचा में जीवन जीने के प्रभावों में हमेशा परमेश्वर का उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता की मांग और मानवीय विश्वासयोग्यता तथा विश्वासघात के परिणाम शामिल होते हैं।

यह कहने के साथ-साथ, यह भी महत्वपूर्ण है कि वाचा के इन प्रभावों को कभी यांत्रिक रूप से संचालित होता हुआ न समझें, जैसे कि परमेश्वर की वाचा के प्रभावों का लागू किया जाना हमेशा से पूर्वानुमानित रहा हो। इसके विपरीत, व्यक्तियों, समूहों और संपूर्ण मनुष्यजाति के साथ व्यवहार करते समय परमेश्वर ने हमेशा अपने राजकीय विशेषाधिकार को सुरक्षित रखा। उसने राजा के रूप में अपनी वाचाओं के प्रभावों को उन तरीकों से लागू करने के अपने अधिकार का प्रयोग किया जिससे उसके भव्य राज्य के उद्देश्य पूरे हुए। जब उसे उचित लगा तो उसने परोपकार दिखाया। उसने अपनी राजकीय बुद्धि के अनुसार विश्वासयोग्यता के कुछ मानकों पर बल दिया। उसने अपने विवेक से आशीषें और शाप दिए।

अक्सर, हम समझ नहीं पाते कि परमेश्वर ने कुछ लोगों पर उपकार क्यों दिखाया और दूसरों पर नहीं दिखाया। हमें यह समझने में मुश्किल होती है कि उसने विश्वासयोग्यता के कुछ स्तरों को कुछ लोगों के लिए दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण क्यों माना। कई बार, हम यह नहीं समझ पाते कि परमेश्वर ने कुछ लोगों को आशीषें और दूसरों को शाप क्यों दिए। कई बार, पुराने नियम के लेखकों ने समझाया कि क्यों परमेश्वर ने इस या उस तरीके से अपने राजकीय विशेषाधिकार का प्रयोग किया। अन्य समयों में, उसने ऐसा नहीं किया। फिर भी, हम जानते हैं कि परमेश्वर भला है और कि उसकी बुद्धि हमसे कहीं अधिक श्रेष्ठ है। इसलिए, हम विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं कि कैसे उसने अपने साथ वाचा में जीवन के बुनियादी प्रभावों को संभाला।

यह जानने के लिए कि परमेश्वर की वाचाओं के प्रभाव पुराने नियम में कैसे पाए जाते हैं, हम पुराने नियम की प्रत्येक वाचा को संक्षेप में देखेंगे। सबसे पहले, हम अति प्राचीन सार्वभौमिक वाचाओं को देखेंगे। दूसरा, हम उन राष्ट्रीय वाचाओं पर विचार करेंगे जो परमेश्वर ने पुराने नियम के इस्राएल के साथ बाँधी थीं। और तीसरा हम मसीह में नई वाचा को देखेंगे। आइए पहले सार्वभौमिक वाचाओं में इन प्रभावों को देखें।

सार्वभौमिक वाचाएँ

जैसा कि आपको याद होगा, अति प्राचीन इतिहास के दौरान परमेश्वर ने आदम के साथ नींव की वाचा और नूह के साथ प्राकृतिक स्थिरता की वाचा स्थापित की थी। लेकिन आदम के साथ परमेश्वर के संबंध केवल राज्य की नींव की स्थापना तक ही सीमित नहीं थे। और नूह की वाचा में मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच के संबंध में प्रकृति की स्थिरता से कहीं अधिक बातें शामिल थीं। जैसा कि सभी ईश्वरीय वाचाओं में होता है, परमेश्वर ने इन वाचाओं के तहत जीवन को ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता तथा अनाज्ञाकारिता के परिणामों के प्रभावों के द्वारा संचालित किया।

हम संक्षेप में देखेंगे कि यह प्रत्येक सार्वभौमिक वाचा पर कैसे लागू होता है; पहले आदम के साथ वाचा में और फिर नूह के साथ वाचा में। आइए आदम से शुरू करें।

आदम

सबसे पहले, परमेश्वर ने पहले पुरुष और पहली स्त्री के प्रति बहुत उपकार दिखाया, उनके पाप करने से पहले ही। उन्होंने मनुष्यजाति के लिए संसार को तैयार किया, वह उसे गड़बड़ी से निकालकर व्यवस्थित रूप में लेकर आया। और उसने एक शानदार वाटिका बनाई और आदम और हव्वा को उस वाटिका में रखा। और दिन-प्रतिदिन परमेश्वर ने मनुष्यजाति को सभी प्रकार के विशेषाधिकार प्रदान किए जो पाप में पतन के भी बाद तक रहे।

> बाइबल की सभी वाचाएँ कई तरीकों से परमेश्वर के उपकार को प्रकट करती हैं। इसे देखने का एक सरल तरीका यह है कि परमेश्वर, बिना किसी बाध्यता के, अपने लोगों के साथ एक संबंध बनाने का निर्णय लेता है... साथ ही, ईश्वरीय उपकार इस बात में भी प्रकट होता है कि कैसे परमेश्वर अपने लोगों को आनंद लेने के लिए कई आशीषें देता है। आदम और हव्वा के विषय में, पहली वाचा में, ईश्वरीय उपकार इस बात में भी दर्शाया गया कि कैसे परमेश्वर ने जो कुछ भी बनाया था वह सब उनके इस्तेमाल के लिए दे दिया।
>
> — डॉ. डेविड कोरेआ, अनुवाद

दूसरा, आदम के साथ वाचा के लिए मानवीय विश्वासयोग्यता की भी आवश्यकता थी। आदम और हव्वा से अपने स्वरूपों के रूप में सेवा करने की मांग करने के अलावा, परमेश्वर ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के साथ उनकी विश्वासयोग्यता को परखा। जैसा कि परमेश्वर ने उत्पत्ति 2:16-17 में आज्ञा दी :

> तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना (उत्पत्ति 2:16-17)।

आदम और हव्वा के इस परीक्षा में असफल होने के बाद भी, परमेश्वर उनसे और उनके ठीक बाद के वंशजों से मानवीय विश्वासयोग्यता की मांग करता रहा।

और तीसरा, आदम और हव्वा की आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणाम निकले। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से स्पष्ट रूप से कहा कि यदि वे अविश्वासयोग्य होंगे और प्रतिबंधित फल खाएँगे तो उन्हें उसके शाप के परिणाम भुगतने होंगे। उत्पत्ति 2:17 में परमेश्वर ने उनसे कहा :

> जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा (उत्पत्ति 2:17)।

इसका अर्थ यह है कि यदि आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके इस परख में सफल हो गए होते, तो उन्हें बहुत आशीष मिलती।

परमेश्वर के साथ आदम के जीवन में परमेश्वर की वाचा के सभी प्रभाव शामिल थे। और जैसा कि हम उत्पत्ति की पुस्तक से जानते हैं, जो आदम और हव्वा पर लागू हुआ वह उन पीढ़ियों के लिए भी दिन-प्रतिदिन लागू होता गया जो आदम के साथ परमेश्वर की वाचा के अधीन रहीं। परमेश्वर के राजकीय विवेक के आधार पर, इतिहास की इस अवधि के दौरान परमेश्वर के साथ जीवन में ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और परिणाम शामिल रहे।

आदम के साथ सार्वभौमिक वाचा के अतिरिक्त, नूह और उसकी वाचा के अधीन रहनेवाले अन्य लोग भी उसी त्रिरूपीय प्रभाव के आधार पर परमेश्वर के सामने रहे।

नूह

पहला, परमेश्वर के उपकार ने नूह की वाचा के लिए मार्ग तैयार किया। जब परमेश्वर ने अपने धर्मी दंड में मनुष्यजाति को नष्ट करने का निश्चय किया, तो उसने नूह और उसके परिवार को बचाने का भी निश्चय किया। जैसा कि हम उत्पत्ति 6:8 में पढ़ते हैं :

> परन्तु नूह ने यहोवा की दृष्टि में अनुग्रह पाया (उत्पत्ति 6:8)।

परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार पर बहुत दया की। और ऐसी ही दया नूह के समय से भी आगे उसके वंशजों तक पहुँची।

दूसरा, परमेश्वर ने नूह से विश्वासयोग्यता की मांग की। उसने उसे जहाज बनाने और जानवरों को इकट्ठा करने की आज्ञा दी। उत्पत्ति 6:18-19 को सुनें जहाँ नूह के साथ बाँधी वाचा नूह की जिम्मेदारी के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। वहाँ हम यह पढ़ते हैं :

> तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ; इसलिये तू... जहाज में प्रवेश करना। और सब जीवित प्राणियों में से तू एक एक जाति के दो दो, अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज में ले जाकर, अपने साथ जीवित रखना (उत्पत्ति 6:18-19)।

नूह को अपने परिवार के साथ जहाज में प्रवेश करने के द्वारा और जानवरों को जीवित रखने के लिए उन्हें अपने साथ लाने के द्वारा अपने ईश्वरीय राजा के प्रति विश्वासयोग्यता दर्शानी थी। और उत्पत्ति 9:7 में जल-प्रलय के बाद भी परमेश्वर ने नूह और उसके वंशजों को परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मनुष्यजाति की भूमिका निभाने के लिए बुलाया। अन्य बातों के अलावा उसने यह कहा :

> और तुम फूलो–फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी पर बहुतायत से सन्तान उत्पन्न करके उसमें भर जाओ (उत्पत्ति 9:7)।

परमेश्वर ने नूह और उसके बाद की पीढ़ियों को अपने प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए बुलाना जारी रखा।

तीसरी, नूह की वाचा की अवधि के दौरान आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के मानवीय कार्यों के परिणाम निकले। नूह स्वयं परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य था। इसलिए, जल-प्रलय के बाद परमेश्वर उसके बलिदान से प्रसन्न हुआ और उसे एक स्थिर संसार की आशीष दी। जैसा कि हम उत्पत्ति 8:20-21 में पढ़ते हैं :

> तब नूह ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई; और सब शुद्ध पशुओं और सब शुद्ध पक्षियों में से कुछ कुछ लेकर वेदी पर होमबलि चढ़ाया। इस पर यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाकर सोचा, "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूँगा, यद्यपि मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता है वह बुरा ही होता है; तौभी जैसा मैं ने सब जीवों को अब मारा है, वैसा उनको फिर कभी न मारूँगा" (उत्पत्ति 8:20-21)।

परन्तु परमेश्वर ने जल-प्रलय के बाद यह भी स्पष्ट कर दिया कि उसके विरुद्ध विद्रोह करने पर शापों के गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 9:6 में परमेश्वर ने हत्यारों पर आने वाले शाप के बारे में बताया :

> जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा (उत्पत्ति 9:6)।

जैसा कि उत्पत्ति का विवरण कई तरीकों से दर्शाता है, नूह की वाचा की अवधि के दौरान वाचा के संपूर्ण प्रभावों ने हर व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करना जारी रखा।

अब परमेश्वर की वाचाओं के प्रभावों ने केवल अति प्राचीन सार्वभौमिक वाचाओं के दौरान ही जीवन को प्रभावित नहीं किया। उन्होंने उन राष्ट्रीय वाचाओं के दौरान भी परमेश्वर के सामने जीवन को आकार दिया जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बाँधी थीं।

राष्ट्रीय वाचाएँ

अब्राहम के साथ बाँधी वाचा ने इस्राएल के चुनाव और प्रतिज्ञा पर बल दिया, मूसा के साथ बाँधी वाचा ने व्यवस्था के दिए जाने को दर्शाया, और दाऊद के साथ बाँधी वाचा ने दाऊद के स्थायी राजवंश पर बल दिया। लेकिन अब्राहम के साथ वाचा के दौरान जीवन में इस्राएल के चुनाव और प्रतिज्ञाओं से कहीं अधिक बातें शामिल थीं। मूसा की वाचा के समय में व्यवस्था दिए जाने से कहीं अधिक बातें शामिल थीं। और दाऊद की वाचा के युग के दौरान, अपने लोगों के साथ परमेश्वर संबंधों में केवल दाऊद के वंश से कहीं अधिक बातें शामिल थीं। पहले की वाचाओं के समान, प्रत्येक राष्ट्रीय वाचा को ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और आशीषों तथा शापों के परिणामों द्वारा रचा गया था।

एक बार फिर, हम इन राष्ट्रीय वाचाओं को उसी क्रम में देखेंगे जिसमें वे पाई जाती हैं : पहली, अब्राहम के साथ वाचा; दूसरी, मूसा के साथ वाचा; और तीसरी, दाऊद के साथ वाचा। आइए हम अब्राहम के साथ शुरू करें।

अब्राहम

सबसे पहले, परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति बहुत उपकार दिखाया। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने अब्राहम के प्रति बहुत दया दिखाई जब उसने पहले पहल अब्राहम को कनान देश में जाने के लिए बुलाया। उत्पत्ति 12:2 पर विचार करें जहाँ परमेश्वर ने कहा :

> मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान् करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा (उत्पत्ति 12:2)।

अब्राहम के पूरे जीवन भर, परमेश्वर ने कुलपिता पर दया दिखाई। उसने उसका पाप क्षमा किया, उसे धर्मी गिना और संकटों से उसकी रक्षा की। और यही बात अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा के अधीन पाए जानेवाले उसके वंशजों की हर पीढ़ी पर लागू हुई।

दूसरा, परमेश्वर ने कुलपिता से विश्वासयोग्यता की भी मांग की। उदाहरण के लिए, परमेश्वर की आरंभिक बुलाहट में भी अब्राहम को आज्ञा का पालन करना था। जैसा कि हम उत्पत्ति 12:1 में पढ़ते हैं, परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी :

> अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा (उत्पत्ति 12:1)।

परमेश्वर ने अब्राहम से चाहा कि वह अपने देश और परिवार को छोड़कर ऐसी जगह पर जाए जिसे उसने कभी नहीं देखा था। और उत्पत्ति 17:1-2 में परमेश्वर ने अब्राहम को विश्वासयोग्यता की मांग की याद दिलाई जब उसने इन शब्दों में अपनी वाचा की पुष्टि की :

> मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा। मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊँगा (उत्पत्ति 17:1-2)।

हालाँकि कई मसीही इसे देखने में असफल होते हैं, पर अब्राहम के परमेश्वर के साथ वाचाई संबंध में विश्वासयोग्यता की मांग शामिल थी। बार-बार परमेश्वर ने अपनी वाचा के अधीन अब्राहम और उसके सभी वंशजों से आज्ञाकारिता की मांग की।

> यदि आप परमेश्वर के साथ अब्राहम के संबंध को देखें, तो यह ऐसा संबंध था जिसे सर्वोच्चता के द्वारा आरंभ किया गया था। इसे वहाँ पूरा किया गया जहाँ उत्पत्ति 15 में जानवरों के दो भागों में काटे जाने में परमेश्वर ने वाचा के शापों को अपने ऊपर ले लिया, लेकिन इनमें से किसी भी बात ने अब्राहम पर से शर्तों को नहीं हटाया। और इसलिए, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन, जिसे हम आसानी से परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति "विश्वासयोग्यता," परमेश्वर पर भरोसा करने की विश्वासयोग्यता कह सकते हैं, वह तंत्र है जिसके द्वारा वह वाचा की आशीषों को संचालित करता है।
>
> — रेव्ह. माईकल जे. ग्लोडो

तीसरा, परमेश्वर ने यह भी स्पष्ट किया कि अब्राहम की आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणाम होंगे। उत्पत्ति 17:1-2 को एक बार फिर से सुनें। पद 1 में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा :

> मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा (उत्पत्ति 17:1)।

और फिर पद 2 में :

> मैं तेरे साथ वाचा बाँधूँगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊँगा (उत्पत्ति 17:2)।

परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से कहा कि अब्राहम के वंशजों की वृद्धि अब्राहम की आज्ञाकारिता के लिए आशीष का परिणाम होगी। और इसी रीति से, परमेश्वर ने यह भी कहा कि अविश्वासयोग्यता के फलस्वरूप कड़े शाप सहने पड़ेंगे। एक और उदाहरण के रूप में, सुनें कि उसने उत्पत्ति 17:10-14 में अब्राहम से क्या कहा :

> मेरे साथ बाँधी हुई वाचा, जिसका पालन तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को करना पड़ेगा, वह यह है : तुम में से एक एक पुरुष का खतना हो... जो पुरुष खतनारहित रहे, अर्थात् जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बाँधी हुई वाचा को तोड़ दिया (उत्पत्ति 17:10-14)।

परमेश्वर ने वाचाई विश्वासयोग्यता के प्रति समर्पण के संकेत के रूप में खतना करवाने की मांग की कि यदि उसके किसी भी पुरुष वंशज का खतना नहीं हुआ, तो उन्हें उसके लोगों में से नष्ट होने का शाप सहना पड़ेगा। उन्हें वाचाई जीवन की आशीषों से बाहर रखा जाएगा।

इन तीनों वाचाओं के प्रभावों ने परमेश्वर के साथ अब्राहम के व्यक्तिगत संबंधों को आकार दिया, और वे उसके बाद दूसरों के जीवन को भी संचालित करते रहे।

दूसरी राष्ट्रीय वाचा जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बाँधी वह सीनै पर्वत पर मूसा की वाचा थी। जैसा कि हमने देखा, इस वाचा ने परमेश्वर की व्यवस्था पर बल दिया। लेकिन यह सोचना एक भयानक गलती होगी कि मूसा की वाचा के अधीन वाचा के अन्य प्रभाव जीवन से अनुपस्थित थे।

मूसा

यह देखने के लिए कि मूसा की वाचा में वाचा के सभी प्रभाव सक्रिय थे, आइए इस वाचा के केंद्र बिंदु, अर्थात् दस आज्ञाओं को संक्षेप में देखें। सबसे पहले, ईश्वरीय उपकार उस प्रस्तावना में स्पष्ट है जो परमेश्वर के नियमों से पहले आता है। आपको याद होगा कि निर्गमन 20:2 में दस आज्ञाएँ इस प्रकार शुरू होती हैं :

> मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है (निर्गमन 20:2)।

मूसा के साथ बाँधी गई वाचा कार्यों की वाचा नहीं थी; यह परमेश्वर की दया और अनुग्रह पर स्थापित थी। और परमेश्वर मूसा के साथ बाँधी अपनी वाचा की अवधि के दौरान इस्राएल की पीढ़ियों पर इसी तरह दया करता रहा। फिर भी, दस आज्ञाएँ यह भी स्पष्ट करती हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों से विश्वासयोग्यता की मांग की। जैसे कि पहली आज्ञा निर्गमन 20:3 में कहती है :

> तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना (निर्गमन 20:3)।

ईश्वरीय अनुग्रह मानवीय विश्वासयोग्यता के विपरीत नहीं थी। बल्कि, इसने इस्राएल की ओर से विश्वासयोग्यता के आभारपूर्ण प्रत्युत्तर का समर्थन किया और उसकी ओर अगुवाई की।

> इससे पहले कि परमेश्वर अपने लोगों को कोई नियम देता, परमेश्वर उन्हें अपने अनुग्रह की याद दिलाता है — "मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है।" और वह शेष दस आज्ञाओं को स्थापित करता है, परमेश्वर के लोग *बनने* के लिए नियमों के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के लोगों को एक *चरित्र,* या जीवन का मार्ग प्रदान करता है, जो उन्हें परमेश्वर के अनुग्रह का उत्तर देने की अनुमति देता है... हमारे पास जो पहली आज्ञाएँ हैं, उनमें आप वास्तव में परमेश्वर से कैसे प्रेम करते हैं? आप परमेश्वर को छोड़ दूसरों को ईश्वर न मानने, कोई मूर्ति खोदकर न बनाने, या परमेश्वर की प्रतिमा न बनाने, और परमेश्वर का नाम व्यर्थ में न लेने के द्वारा परमेश्वर से प्रेम करते हैं... फिर दस आज्ञाओं का दूसरा भाग जो इससे शुरू होता है, "तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना," नियमों की एक श्रृंखला के रूप में हमारे पास है जो हमें अन्य लोगों के साथ संबंध रखने के मापदंड प्रदान करती है, क्योंकि पवित्रशास्त्र के परमेश्वर के साथ, यह केवल एक व्यक्तिगत आत्मिकता नहीं है; इसमें एक सामुदायिक भाग भी है। केवल परमेश्वर से प्रेम करना पर्याप्त नहीं है। यह महत्वपूर्ण भाग है, लेकिन फिर इसे उस रूप में व्यक्त करना जरूरी है कि हम कैसे जीते हैं, और कैसे दूसरों से प्रेम करते हैं, और यह दस आज्ञाओं का दूसरा भाग है।
>
> — डॉ. ब्रायन डी. रसेल

इससे बढ़कर, दस आज्ञाएँ आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणामों के बारे में भी बात करती हैं। निर्गमन 20:4-6 में हम यह पढ़ते हैं :

> तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना...तू उनको दण्डवत् न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ, और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हज़ारों पर करुणा किया करता हूँ (निर्गमन 20:4-6)।

अब जब हमने अब्राहम और मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा के प्रभावों को देख लिया है, तो आइए पुराने नियम के इस्राएल के साथ अंतिम राष्ट्रीय वाचा, अर्थात् दाऊद के साथ वाचा को भी देखें। इस वाचा ने बल दिया कि परमेश्वर दाऊद के वंश को इस्राएल पर शासन करने के लिए स्थायी राजवंश के रूप में स्थापित कर रहा है।

दाऊद

निस्संदेह, जब हम दाऊद और उसके वंशजों के जीवन के व्यापक विवरण को देखते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इस वाचा के अधीन जीवन में ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता तथा अनाज्ञाकारिता के परिणाम शामिल थे। उदाहरण के लिए, भजन 89:3-4 में दाऊद के प्रति परमेश्वर के उपकार के विषय पर क्या कहा गया है उसे सुनें :

> तू ने कहा, "मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है, मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, 'मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा'" (भजन 89:3-4)।

ये पद उस उपकार को दर्शाते हैं जो परमेश्वर ने दाऊद को और उसके वंशजों को इस्राएल के अधिकारपूर्ण राजाओं के रूप में चुनने और बनाए रखने के द्वारा दिखाया था। लेकिन परमेश्वर ने विश्वासयोग्यता की भी मांग की, और इस वाचा में अनाज्ञाकारिता करने पर शाप के परिणामों की चेतावनी दी। भजन 89:30-32 को सुनें :

> यदि उसके वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें, और मेरे नियमों के अनुसार न चलें...तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोटें से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूँगा (भजन 89:30-32)।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, यदि दाऊद के पुत्र परमेश्वर के नियमों को त्याग देते हैं, तो उन्हें कठोर दंड दिया जाएगा। लेकिन जैसे कि अनगिनत अनुच्छेद हमें बताते हैं, यदि दाऊद और उसके वंशज परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहते तो उन्हें बड़ी आशीषें मिलतीं। और निस्संदेह, दाऊद के घराने पर आशीषों और शापों ने इस समय से आगे परमेश्वर के सभी लोगों के जीवनों को प्रभावित किया।

सार्वभौमिक और राष्ट्रीय वाचाओं में जीवन के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, हम नई वाचा, अर्थात् पूर्णता की वाचा की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं।

नई वाचा

परमेश्वर ने पूरे पुराने नियम के इतिहास में एक के ऊपर एक वाचा बाँधकर अपने राज्य के आगे बढ़ने को संचालित किया। लेकिन जैसा कि हम जानते हैं, जब यीशु पृथ्वी पर आया, तब तक इस्राएल ने परमेश्वर के विरुद्ध इतना खुला विद्रोह कर दिया था कि उसने अपने लोगों पर कठोर शाप उंडेल दिए थे। केवल कुछ बचे हुए इस्राएली ही विश्वासयोग्य रहे थे। लेकिन नई वाचा में, परमेश्वर का राज्य अपनी पूर्णता तक पहुँचता है। और परमेश्वर का राज्य मसीह के राजत्व के द्वारा पृथ्वी की छोर तक फैलता है। इस भाव में, नई वाचा उसका विरोध नहीं करती जो परमेश्वर ने अतीत में किया था। बल्कि, यह उस उद्देश्य को पूरा करती है जो उसने पूरे इतिहास में अपने राज्य के लिए रखा था। इसलिए, हमें यह जानकर बिल्कुल हैरानी नहीं होनी चाहिए कि परमेश्वर के साथ वाचा के अधीन जीवन का त्रिरूपीय प्रभाव नई वाचा में भी पाया जाता है।

सबसे पहले, नई वाचा में ईश्वरीय उपकार शामिल है। जब परमेश्वर ने नई वाचा स्थापित की तो उसने अपने निर्वासित लोगों पर बड़ी दया दिखाने की प्रतिज्ञा की। जैसा कि यिर्मयाह 31:34 में लिखा है :

> क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह 31:34)।

इस और कई अन्य रूपों में, नई वाचा स्पष्ट रूप से परमेश्वर की करुणा को प्रकट करती है।

साथ ही, मानवीय विश्वासयोग्यता नई वाचा में भी एक कारक है। परमेश्वर अपने नियमों को समाप्त करने की प्रतिज्ञा नहीं करता, और वह किसी को भी उनका पालन करने से छूट नहीं देता। इसके विपरीत, वह उन्हें विश्वासयोग्य बने रहने के योग्य बनाता है। वास्तव में, परमेश्वर ने यिर्मयाह 31:33 में प्रतिज्ञा की :

> मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा (यिर्मयाह 31:33)।

नई वाचा की अवधि में, परमेश्वर अपने लोगों को अपनी व्यवस्था के प्रति प्रेम देगा ताकि वे ईमानदारी से उसका पालन करें।

और अंततः, नई वाचा में आशीषों और शापों के परिणाम भी स्पष्ट हैं। जैसा कि यिर्मयाह 31:33 कहना जारी रखता है :

> और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे (यिर्मयाह 31:33)।

यह घोषणा आश्वस्त करती है कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए बड़ी आशीषें लाएगा क्योंकि वह उन्हें अपनी वाचा की जिम्मेदारियों को निभाने में योग्य बनाएगा। और यहाँ अर्थ यह है कि जो कोई इन जिम्मेदारियों को नहीं निभाता, वह इन आशीषों को प्राप्त नहीं करेगा।

> जो बात नई वाचा को पुरानी वाचा से अलग करती है, वह है इसका पालन करने की लोगों की योग्यता। यिर्मयाह 31 में, परमेश्वर कहता है कि वह उनके हृदयों पर व्यवस्था को लिखेगा, कि वह अपनी व्यवस्था उनके बीच में डालेगा, और फिर वह वाचा के सूत्र के साथ यह कहता है — "मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा और तुम मेरी प्रजा ठहरोगे।" अब, यह समझने के लिए कि परमेश्वर अपने लोगों के हृदयों पर व्यवस्था को कैसे लिखेगा, यहेजकेल में पाए जानेवाले एक समान अनुच्छेद को देखना सहायक होगा। यहेजकेल 36 में, परमेश्वर यह नहीं कहता कि वह अपनी व्यवस्था उनके बीच में डालेगा, बल्कि वह अपना आत्मा उनके बीच उंडेलेगा। और वह यह नहीं कहता कि वह व्यवस्था को उनके हृदयों पर लिखेगा, बल्कि वह कहता है, "मैं... ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।" और फिर, जैसा कि वह यिर्मयाह 31 में करता है, वह फिर से वाचा के सूत्र के साथ यह कहता है — "तुम मेरी प्रजा ठहरोगे, और मैं तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँगा।" अतः भविष्यवाणियों के इन वचनों को एक साथ देखने पर, हम पाते हैं कि परमेश्वर अपने आत्मा को उनके बीच उंडेलने के द्वारा अपने लोगों के हृदयों पर व्यवस्था को लिखेगा। स्वयं परमेश्वर की वास करनेवाली उपस्थिति के द्वारा, वह ऐसा करेगा कि नई वाचा के युग में उसके लोग उसकी व्यवस्था का पालन करेंगे। और इसलिए, नई वाचा में यह हमारी विश्वासयोग्यता के कारण नहीं बल्कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सुरक्षित है जो हमारे बीच में निवास करता और कार्य करता है।
>
> — डॉ. मैथ्यू न्यूकिर्क

अब, हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि नई वाचा मसीह में परमेश्वर के राज्य के अंतिम चरण की पद्धति का अनुसरण करते हुए, तीन चरणों में लागू होती है। नई वाचा की शुरूआत मसीह के पहले आगमन और उसके प्रेरितों के कार्य में हुई थी। कलीसिया के पूरे इतिहास में, नई वाचा कलीसिया में काम करनेवाली मसीह की सामर्थ्य के द्वारा आगे बढ़ती जा रही है। और नई वाचा तब अपनी पूर्णता में आएगी जब युग की समाप्ति पर मसीह महिमा में वापस आएगा।

सबसे पहले, नया नियम इस बात पर बल देता है कि नई वाचा का आरम्भ ईश्वरीय उपकार द्वारा हुआ जब पिता ने अपने पुत्र को संसार में भेजा। यह इस बात पर भी बल देता है कि स्वयं मसीह ने मानवीय विश्वासयोग्यता की हर मांग को पूरा किया, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक भी। और यह इस बात पर भी बल देता है कि मसीह को मृतकों में से पुनरुत्थान की आशीष मिली। और फलस्वरूप, जिनके पास मसीह में उद्धार देनेवाला विश्वास है, वे सब परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य बना दिए गए हैं। जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 9:12-15 में कहा है :

> [मसीह ने] बकरों और बछड़ों के लहू के द्वारा नहीं पर अपने ही लहू के द्वारा, एक ही बार पवित्रस्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया... इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है (इब्रानियों 9:12-15)।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को परमेश्वर की व्यवस्था की हर बात को पूरा करने और पाप के लिए एक सिद्ध और पूर्ण बलिदान के रूप में स्वयं को चढ़ाने के लिए भेजने के द्वारा नई वाचा को स्थापित करने हेतु इतिहास में हस्तक्षेप किया। और उसका बलिदान उन सब को अनंत क्षमा प्रदान करता है जो उस पर विश्वास करते हैं।

> यह एक अद्भुत मसीही सिद्धांत है, यह पुराने नियम से अलग है जहाँ मध्यस्थ, अर्थात् याजक को पाप की क्षमा के लिए वर्ष-प्रतिवर्ष बैलों और बकरियों की बलि चढ़ानी पड़ती थी, लेकिन यीशु ने वास्तव में एक ही बार और सब के लिए अति पवित्र स्थान में प्रवेश किया, जैसा कि बाइबल हमें बताती है। जब वह क्रूस पर मारा गया, जब उसने हमारे पापों के लिए अपना लहू बहाया, तो इसका अर्थ था कि उसने हमारे लिए प्रभु के निकट पहुँचने का एक मार्ग बनाया ताकि हमारे पास वास्तव में कोई ऐसा व्यक्ति हो जो हमारा प्रतिनिधित्व कर सके, जहाँ से हम उसके लहू के द्वारा पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकें।
>
> — डॉ. वुयानी सिंदो

अब, मसीह के पहले आगमन में मसीह के उद्धार के कार्य के महत्व के बावजूद, नई वाचा का महान उद्धार नई वाचा के मध्यस्थ के रूप में मसीह के कार्य की निरंतरता पर भी निर्भर करता है। मसीह दिन-प्रतिदिन स्वर्ग में अपने पिता के सिंहासन के सामने अपने लोगों की ओर से मध्यस्थता है। इब्रानियों 7:24-25 में इब्रानियों के लेखक ने इस वास्तविकता की ओर संकेत किया जब उसने ये शब्द लिखे :

> [यीशु] युगानुयुग रहता है, इस कारण उसका याजक पद अटल है। इसी लिये जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है (इब्रानियों 7:24-25)।

परमेश्वर के उपकार के कारण, मसीह हमारी ओर से शासन करता है और मध्यस्थता करता है। वह हमारी असफलताओं को दूर करता है और हमारी अनंत आशीषों को सुनिश्चित करता है।

और अंत में, क्योंकि मसीह ने हमारे पापों की कीमत चुकाई है और हमारी ओर से मध्यस्थता करना जारी रखता है, इसलिए हम आश्वस्त हो सकते हैं कि मसीह में परमेश्वर के राज्य की पूर्णता एक दिन

आएगी। जब वह दिन आएगा, तो हम परमेश्वर के ऐसे उपकार को देखेंगे, जैसा पहले कभी नहीं देखा। जैसा कि इब्रानियों के लेखक ने इब्रानियों 9:28 में समझाया है :

> वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिये एक बार बलिदान हुआ; और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिये दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई देगा। (इब्रानियों 9:28)।

जब वह दिन आएगा, तो प्रत्येक व्यक्ति जिसने मसीह पर भरोसा किया है, वह परमेश्वर की इच्छा के प्रति पूरी तरह से विश्वासयोग्य होगा, और हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में अनंत जीवन की आशीष प्राप्त करेंगे।

> जब हम अपने प्रभु के कार्य के बारे में सोचते हैं, तो हम अक्सर इसे पहले आगमन और दूसरे आगमन के संदर्भ में सोचते हैं। अपने पहले आगमन में — जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान — वह इस संसार में राज्य को लेकर आया है। वह नई वाचा का युग लेकर आया है। वह पापों की पूर्ण क्षमा लेकर आया है। उसने पाप को हरा दिया है, मृत्यु को हरा दिया है, शैतान को हरा दिया है... जब वह फिर से आएगा, तो वह पाप और मृत्यु और शैतान को पूरी तरह से अपने पैरों के नीचे कर देगा ताकि बुराई नष्ट हो जाए, पूरा हिसाब किया जाएगा, अंतिम न्याय होगा, जहाँ सार्वजनिक रूप से पाप और मृत्यु को पराजित किया जाएगा, जो उसके नहीं हैं उन्हें हमेशा के लिए अनंतकाल का दंड दिया जाएगा। जो उसके हैं वे नए आकाश और नई पृथ्वी के फल और लाभ का आनंद लेंगे, और फिर हम देखेंगे कि सब कुछ को उसके परिणाम तक पहुँचाया गया है।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेलम

अब जब हमने परमेश्वर के राज्य और उसकी वाचाओं, उसकी वाचाओं के इतिहास और परमेश्वर की वाचाओं के मूल प्रभावों पर विचार कर लिया है, तो हमें अपने अंतिम विषय की ओर मुड़ना चाहिए : परमेश्वर की वाचा के लोग।

वाचाओं के लोग

जब-जब परमेश्वर ने अपने राज्य को वाचाओं के द्वारा संचालित किया, उसने हमेशा लोगों के साथ कार्य किया। और हमें इससे चकित नहीं होना चाहिए। मनुष्य परमेश्वर के राजकीय, याजकीय स्वरूप हैं, जिन्हें पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को फैलाने के लिए रचा गया है। लेकिन वास्तव में, परमेश्वर की वाचाओं में अलग-अलग समय पर अलग-अलग प्रकार के लोग शामिल थे। पवित्रशास्त्र में यह विभिन्नता कैसे प्रकट होती है? और जब हम परमेश्वर की वाचाओं के लोगों पर विचार करते हैं तो इससे क्या फर्क पड़ता है?

इन सवालों का जवाब देने के लिए, हम दो विषयों पर ध्यान देंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि कैसे परमेश्वर की वाचाओं ने विभिन्न तरीकों से मनुष्यजाति के विभिन्न विभाजनों को परस्पर कार्य में जोड़ा। और दूसरा, हम देखेंगे कि इन विभाजनों ने परमेश्वर की वाचाओं के लोगों के लिए वाचा के प्रभावों के लागू किए जाने को कैसे प्रभावित किया। आइए सबसे पहले देखें कि परमेश्वर ने मनुष्यजाति के विभिन्न विभाजनों के साथ कैसे वाचाएँ बाँधीं।

मनुष्यजाति के विभाजन

पुराने नियम से परिचित हर कोई जानता है कि यह अक्सर विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों और लोगों के समूहों के बीच अंतर करता है — उनमें से कुछ का उल्लेख करें तो पुरुष और स्त्रियाँ, बुजुर्ग और जवान, बलवान और कमजोर। अब निस्संदेह, हमारे लिए इस विविधता का विस्तार से वर्णन करना असंभव है। लेकिन लोगों के ऐसे कई बड़े समूहों पर ध्यान केंद्रित करना सहायक होगा जो अक्सर उसके केंद्र में पाए जाते हैं जो बाइबल हमें ईश्वरीय वाचाओं के बारे में बताती है।

हम सबसे पहले यह देखने के द्वारा मनुष्यजाति के इन विभाजनों को देखेंगे कि कैसे विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों को परमेश्वर की वाचाओं में शामिल किया गया है। फिर हम उन लोगों के बीच विभाजन को देखेंगे जो परमेश्वर की वाचाओं में शामिल हैं और जो उनसे बाहर हैं। आइए इस तथ्य से शुरु करें कि परमेश्वर की वाचाओं में विश्वासी और अविश्वासी दोनों हैं।

वाचाओं के भीतर

मसीही अक्सर यह मानते हैं कि केवल सच्चे विश्वासियों ने ही परमेश्वर के साथ वाचा में प्रवेश किया है, लेकिन ऐसा शायद ही होता है। आपको याद होगा कि हमने आदम और नूह के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचाओं को सार्वभौमिक वाचाएँ कहा था क्योंकि उन्होंने सब लोगों को परमेश्वर से जोड़ा था। और एक बार जब मनुष्यजाति का पाप में पतन हो गया, तो ऐसा विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों के साथ हुआ। आदम की वाचा में स्थापित परमेश्वर के राज्य के मूलभूत सिद्धांत उन लोगों पर लागू हुए हैं जिनके पास उद्धार देनेवाला विश्वास था, जैसे कि हाबिल और शेत, और उन लोगों पर भी जिनके पास विश्वास नहीं था, जैसे कैन और उसके हत्यारे वंशज लेमेक पर। लगभग इसी तरह, नूह के समय में प्रकृति में स्थिरता की वाचा भी विश्वासियों, जैसे कि नूह के पुत्र शेम, और अविश्वासियों, जैसे नूह के पोते कनान, के लिए उपलब्ध थी।

यही बात अब्राहम, मूसा और दाऊद में इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं पर भी लागू हुई। इन वाचाओं के द्वारा इस्राएल के सभी लोग परमेश्वर के साथ वाचा में थे, चाहे उन्हें अनंत उद्धार प्राप्त हुआ हो या नहीं। उदाहरण के लिए, याकूब और एसाव दोनों का खतना हुआ था और वे अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा में थे। मूसा के समय में इस्राएल के प्रत्येक गोत्र में विश्वासी और अविश्वासी दोनों थे, जब उन्होंने सीनै पर्वत पर वाचा में प्रवेश किया था। दाऊद के साथ परमेश्वर की राजवंश की वाचा के साथ भी ऐसा ही था। दाऊद के सभी वंशज और इस्राएल के नागरिक परमेश्वर के साथ वाचा में थे, चाहे वे सच्चे विश्वासी थे या नहीं।

अब जब नई वाचा में अविश्वासियों की बात आती है तो हमें सावधान रहना होगा। नई वाचा के बारे में पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ दर्शाती हैं कि इसमें केवल सच्चे विश्वासी ही शामिल होंगे। यिर्मयाह 31:34 में सुनिए कि किस प्रकार यिर्मयाह ने नई वाचा के लोगों का वर्णन किया :

> तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूँगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूँगा (यिर्मयाह 31:34)।

जैसा कि यह अनुच्छेद दर्शाता है, नई वाचा का प्रत्येक व्यक्ति प्रभु को जानेगा और उसके पापों को स्थायी रूप से क्षमा किया जाएगा। उनका कोई भी अपराध उनके विरूद्ध कभी गिना नहीं जाएगा।

फिर भी, जब हम सोचते हैं कि यिर्मयाह की भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई, तो हमें नई वाचा के युग की एक विशेषता को ध्यान में रखना चाहिए जिसका हमने इस श्रृंखला में कई बार उल्लेख किया है। नया नियम स्पष्ट करता है कि मसीह में नई वाचा तीन चरणों में पूरी होती है। इसका आरंभ मसीह के पहले

आगमन में हुआ; यह कलीसिया के पूरे इतिहास में जारी है; और यह तभी अपनी पूर्णता तक पहुँचेगा जब मसीह का महिमा में पुनरागमन होगा।

नई वाचा के युग का इस तरह से तीन चरणों में प्रकट होना हमें यह समझने में सहायता करता है कि मसीह के पुनरागमन तक विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों को परमेश्वर के लोगों में गिना जाता है। मसीह के राज्य के आरंभ के दौरान उसके अनुयायियों में विश्वासी और अविश्वासी दोनों थे। और यही बात मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान भी लागू होती है। दृश्य मसीही कलीसिया में सच्चे विश्वासी शामिल हैं जिन्होंने वास्तव में अनंत उद्धार प्राप्त किया है, *और* अविश्वासी भी शामिल हैं जो मसीह और उसके कलीसिया के साथ अपने संबंध के कारण अस्थायी आशीषें प्राप्त करते हैं।

> दृश्य कलीसिया क्या है? सार्वभौमिक कलीसिया, अर्थात् पूरे संसार की कलीसिया में कई स्थानीय कलीसियाएँ, कई संप्रदाय और कुछ ऐसी कलीसियाएँ शामिल होती हैं जो स्वयं को संप्रदाय नहीं मानती हैं... यह धर्मविज्ञान में *अदृश्य* कलीसिया से अलग है। और अदृश्य कलीसिया वह कलीसिया नहीं जिसे आप देख सकते हों बल्कि वह कलीसिया है जिसे आप नहीं देख सकते। इब्रानियों 12, पहिलौठों की कलीसिया की साधारण सभा, अर्थात् वे जो मरकर स्वर्ग जा चुके हैं, जिसका अर्थ है वे चुने हुए लोग जो अब स्वर्गदूतों और प्रधान दूतों की संगति में परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं जो हमेशा से है और रहेगा। अदृश्य कलीसिया और दृश्य कलीसिया से मिलकर यीशु मसीह की कलीसिया बनती है।
>
> — डॉ. डेरेक थॉमस

सुनिए किस प्रकार प्रेरित यूहन्ना ने 1 यूहन्ना 2:19 में कलीसिया में अविश्वासियों के विषय में बात की :

> वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं; क्योंकि यदि वे हम में के होते, तो हमारे साथ रहते; पर निकल इसलिये गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं (1 यूहन्ना 2:19)।

यहाँ प्रेरित ने उन लोगों के बारे में लिखा जो मसीही विश्वास को त्याग देते हैं। उसने स्वीकार किया कि, एक भाव में, उन्हें "हम में" के रूप में माना जाता था। अर्थात्, वे परमेश्वर के लोगों के बीच रहते थे। लेकिन यूहन्ना ने यह भी कहा कि विश्वास को त्यागकर उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे "हम में के नहीं" थे। अर्थात् वे सच्चे विश्वासी नहीं थे। जैसा कि उसने कहा, यदि वे वास्तव में सच्चे विश्वासी होते जिन्होंने मसीह में अनंत उद्धार को प्राप्त किया होता, तो "वे हमारे साथ रहते।" अर्थात् वे अंत तक विश्वासयोग्य बने रहते।

हम सभी जानते हैं कि अधिकांश कलीसियाओं की नामावली में वे लोग शामिल होते हैं जो सच्चे विश्वासी हैं और वे लोग भी जो नहीं हैं। नई वाचा के पूरी तरह से छुटकारा पाए लोगों के बारे में यिर्मयाह की भविष्यवाणी केवल तभी पूरी होगी जब मसीह का पुनरागमन होगा। उस समय, परमेश्वर की वाचा के लोगों में से अविश्वासियों को परमेश्वर के अनंत दंड का सामना करना पड़ेगा। और नई सृष्टि में केवल सच्चे विश्वासी ही मसीह के साथ शासन करने के लिए बचे रहेंगे।

ईश्वरीय वाचाओं के भीतर मनुष्यजाति के विभाजनों के अलावा, परमेश्वर की वाचाओं का पुराने नियम का विवरण उन लोगों के बीच विभाजन को भी संबोधित करता है जो इतिहास की विभिन्न अवधियों के दौरान परमेश्वर की वाचाओं में शामिल थे और जिन्हें बाहर रखा गया था।

सम्मिलित किए गए और बाहर रखे गए

जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, पूरी मनुष्यजाति आदम और नूह के साथ सार्वभौमिक वाचाओं में शामिल थी। इन वाचाओं में स्थापित नींव और प्राकृतिक स्थिरता से किसी भी समूह को बाहर नहीं रखा गया था। लेकिन यह स्थिति तब बदल गई जब परमेश्वर ने इस्राएल को अपने विशेष वाचाई लोगों के रूप में चुना। अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बाँधी राष्ट्रीय वाचाओं में मुख्य रूप से अब्राहम के भौतिक वंशज और केवल कुछ गैर-यहूदी लोग शामिल थे जिन्हें इस्राएल में अपनाया गया था। अधिकतर, अन्यजाति राष्ट्रों को इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं से बाहर रखा गया था। इफिसियों 2:12 को सुनें कि कैसे पौलुस ने मसीह के अनुयायी बनने से पहले अन्यजातियों का वर्णन किया :

> तुम लोग उस समय मसीह से अलग, और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे (इफिसियों 2:12)।

अन्यजाति के लोग प्रतिज्ञा की वाचाओं से अनजान थे। वे आशाहीन और ईश्वररहित थे। अतः इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं की सदियों के दौरान संसार में असल में तीन प्रकार के लोग थे : सच्चे विश्वासी जो इस्राएल की वाचा में थे, अविश्वासी जो इस्राएल की वाचा में थे, और अविश्वासी गैर-यहूदी जिन्हें इस्राएल की वाचाओं से बाहर रखा गया था।

यह त्रिरूपीय अंतर महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मसीह के महिमा में पुनरागमन तक नई वाचा पर भी लागू होता है। जैसा कि हमने देखा है, उस दिन तक, सच्चे विश्वासियों के साथ-साथ उन अविश्वासियों को भी नई वाचा में शामिल किया गया है जो दृश्य कलीसिया से जुड़े हुए हैं। और नए नियम की अवधि के दौरान, एक तीसरी श्रेणी भी है : ऐसे पुरुष और स्त्रियाँ जिन्होंने सुसमाचार या कलीसिया को स्वीकार नहीं किया है। इन लोगों को नई वाचा से बाहर रखा गया है। पुराने नियम के इतिहास के दौरान वाचा से बाहर के लोग मुख्य रूप से अन्यजाति के लोग थे। लेकिन अब जब मसीह आ गया है, तो नई वाचा के बाहर के लोगों में यहूदी और अन्यजाति दोनों शामिल हैं जिनका मसीह या उसकी कलीसिया में कोई भाग नहीं है।

अब जब हमने देख लिया है कि मनुष्यजाति के कुछ विभाजन परमेश्वर की वाचाओं के लोगों से कैसे संबंधित हैं, तो हम इन समूहों के लिए वाचा के प्रभावों के वर्तमान प्रयोग की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। इन श्रेणियों के लोगों ने परमेश्वर के उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता की मांग और आशीषों तथा शापों के परिणामों का कैसे अनुभव किया है?

प्रभावों का वर्तमान प्रयोग

सब लोगों ने आदम और नूह के साथ बाँधी सार्वभौमिक वाचाओं के प्रभावों का अनुभव किया है। आदम में स्थापित मूलभूत नीतियों और नूह में स्थापित प्रकृति की स्थिरता से सभी लोगों का जीवन सीधे-सीधे प्रभावित हुआ है। लेकिन अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ बाँधी इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं के बारे में ऐसा नहीं है। न ही यह नई वाचा पर लागू होता है।

जब हम विभिन्न समूहों के लिए वाचा के प्रभावों के वर्तमान प्रयोग पर विचार करते हैं, तो हमें यह देखने की जरूरत है कि राष्ट्रीय वाचाएँ और नई वाचा तीन प्रकार के लोगों पर कैसे लागू होती हैं : पहला अविश्वासियों को इन वाचाओं से बाहर रखा गया; दूसरा, इन वाचाओं में अविश्वासियों को शामिल किया गया; और तीसरा, सच्चे विश्वासी को इन वाचाओं में शामिल किया गया। आइए सबसे पहले उन अविश्वासियों को देखें जिन्हें इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा से बाहर रखा गया है।

अविश्वासियों का बाहर रखा जाना

जिन अविश्वासियों का राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा से कोई संबंध नहीं है, वे फिर भी आदम और नूह के साथ बाँधी उनकी सार्वभौमिक वाचाओं द्वारा परमेश्वर से बंधे हुए हैं। इस कारण, वे अब भी इन वाचाओं के प्रभावों का अनुभव करते हैं। उन्हें परमेश्वर का उपकार प्राप्त होता है क्योंकि परमेश्वर सब लोगों पर दया करता है। जैसा कि यीशु ने मत्ती 5:45 में कहा है :

> [तुम्हारा] स्वर्गीय पिता... भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है (मत्ती 5:45)।

हम अक्सर इन आशीषों को "सामान्य अनुग्रह" कहते हैं क्योंकि वह उद्धार देनेवाली दया नहीं है। बल्कि, वह सब मनुष्यों के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह का प्रदर्शन है।

इसके अलावा, इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा के बाहर के अविश्वासियों से अब भी मांग की जाती है कि वे उन्हें प्राप्त प्रकाशन के अनुसार परमेश्वर को अपनी विश्वासयोग्य सेवा दें। उन्हें इस्राएल और कलीसिया को दिए गए विशेष प्रकाशन के बारे में कुछ जानकारी हो सकती है। लेकिन भले ही उनका इस्राएल या मसीही कलीसिया से कभी संबंध न रहा हो, फिर भी उन्हें सामान्य या प्राकृतिक प्रकाशन के द्वारा परमेश्वर के प्रति अपनी जिम्मेदारियों की बुनियादी समझ है।

> पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर हमें बताता है — और पौलुस ने रोमियों 1 में यह तर्क दिया है — कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कौन है या किस संस्कृति का है, अब तक जीवित रहा प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में जानता है... पौलुस कहता है कि हर व्यक्ति विवेक से जानता है कि परमेश्वर है। मनुष्य के पास तर्क है, उसके पास विवेक है, और संसार में जो कुछ भी रचा गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का ईश्वरीय स्वभाव स्पष्ट रूप से देखा गया है। अतः सब मनुष्य जानते हैं कि परमेश्वर है।
>
> — रेव्ह. क्लीट हक्स

जैसे कि पौलुस ने रोमियों 1:20 में लिखा :

> [परमेश्वर के] अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं (रोमियों 1:20)।

सामान्य प्रकाशन ने हमेशा इस्राएल के साथ बाँधी वाचाओं और नई वाचा से बाहर के अविश्वासियों को अपने सृष्टिकर्ता को स्वीकार करने और उसकी सेवा करने के लिए प्रेरित किया है।

फलस्वरूप, ये अविश्वासी भी आशीषों और शापों के ऐसे परिणामों का अनुभव करते हैं जैसा परमेश्वर उचित समझता है। परमेश्वर अक्सर उन अविश्वासियों को अस्थायी आशीषें देता है जो कभी इस्राएल या मसीही कलीसिया से नहीं जुड़ते। और जैसा वह निर्धारित करता है, वह उन पर अस्थायी शाप भी डालता है। लेकिन पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि महान न्याय के समय, इस जीवन में परमेश्वर की अस्थायी आशीषें और शाप इन अविश्वासियों को परमेश्वर के अनंत शाप की ओर ले जाएँगे।

इन वाचाओं से बाहर किए गए अविश्वासियों के विपरीत, वाचा के प्रभावों का लागू किया जाना उन अविश्वासियों के साथ अलग तरह से कार्य करता है जो इस्राएल के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचाओं और नई वाचा में शामिल हैं।

अविश्वासियों का सम्मिलित किया जाना

शुरू में कहें तो, परमेश्वर ने इन लोगों पर बहुत उपकार किया है। सच है, उन्हें अनंत उद्धार नहीं मिला है, लेकिन फिर भी, परमेश्वर ने उन अविश्वासियों पर बहुत दया दिखाई है जिन्हें पुराने और नए नियम दोनों में परमेश्वर की वाचा के लोगों में शामिल किया गया है। रोमियों 9:4 में प्रेरित पौलुस ने उन उपकारों पर विचार किया जिनका आनंद इस्राएल में अविश्वासियों ने भी लिया। उसने लिखा :

> लेपालकपन का अधिकार और महिमा और वाचाएँ और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएँ उन्हीं की हैं (रोमियों 9:4)।

परमेश्वर ने उन अविश्वासियों पर अधिक दया दिखाई जो इस्राएल के साथ बाँधी परमेश्वर की वाचाओं में थे, बजाय इसके जो इन वाचाओं से बाहर थे। और यही बात मसीही कलीसिया से जुड़े अविश्वासियों पर भी लागू होती है।

पुराने नियम में, इस्राएल में विश्वासियों और अविश्वासियों दोनों को भौतिक रूप से मिस्र की गुलामी से छुड़ाया गया था। उन सभी को सीनै पर्वत पर परमेश्वर की व्यवस्था का दान मिला था। उन सभी ने प्रतिज्ञा के देश पर विजय प्राप्त की थी। दाऊद और सुलैमान के शासनकाल के दौरान उन्हें आशीष मिली थी। और लगभग उसी तरह, नए नियम की कलीसिया के अविश्वासी भी मसीह की देह के साथ जुड़ने के कारण पवित्र किए जाते हैं। वे वचन का प्रचार सुनते हैं। वे पवित्र आत्मा के कार्य में सहभागी होते हैं। इन और कई अन्य तरीकों से, परमेश्वर ने पुराने नियम के इस्राएल और नए नियम की कलीसिया में अविश्वासियों के प्रति बड़ा उपकार दिखाया है।

परमेश्वर से बड़े उपकार को पाने के साथ-साथ, इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा में पाए जानेवाले अविश्वासियों पर परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से सेवा करने की जिम्मेदारी भी है। उन्हें परमेश्वर की इच्छा का गहरा ज्ञान प्राप्त हुआ है। इसलिए परमेश्वर ने उन्हें आज्ञाकारिता के उच्च स्तरों पर रखा है। जैसा कि यीशु ने लूका 12:48 में कहा है :

> इसलिये जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा (लूका 12:48)।

जो लोग परमेश्वर के वचन के सत्य को सीखते हैं, जो उसके मार्गों को जानते हैं, उन्हें उसके प्रति जवाबदेह ठहराया जाता है जो उन्हें मिला है।

पवित्रशास्त्र यह भी दर्शाता है कि इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा में पाए जानेवाले अविश्वासी को परमेश्वर की आशीषों और शापों के परिणामों का अनुभव भी करते हैं। जैसा परमेश्वर निर्धारित करता है, उन्हें इस जीवन में विभिन्न प्रकार की अस्थायी आशीषें और अस्थायी शाप मिलते हैं। लेकिन जब तक वे मसीह में उद्धार देनेवाला विश्वास नहीं रखते, न्याय के महान दिन ये आशीषें और शाप उन्हें परमेश्वर के अनंत शापों की ओर ही लेकर जाएँगे। वे सदैव परमेश्वर के दंड के अधीन रहेंगे। इब्रानियों 10:28-29 में इब्रानियों के लेखक ने नई वाचा में पाए जानेवाले अविश्वासियों के विरुद्ध आने वाले अनंत दंड के बारे में लिखा है :

> जब मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला... बिना दया के मार डाला जाता है, तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा और वाचा के लहू को, जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया (इब्रानियों 10:28-29)।

यहाँ ध्यान दें कि ये लोग "वाचा के लहू" से "पवित्र ठहराए गए" हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें अनंत उद्धार प्राप्त हो गया था। बल्कि, उन्हें नई वाचा में भाग लेने वालों के रूप में संसार से अलग

किया गया था। और जब ये लोग परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह करते हैं — जैसा कि वे हमेशा किसी न किसी हद तक करते हैं — तो केवल एक ही अपेक्षा होती है, अर्थात्, परमेश्वर का अनंत दंड, वह दंड जो उसने अपने शत्रुओं के लिए रखा है।

हमने इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा में अविश्वासियों के बाहर होने और उनके शामिल होने पर विचार कर लिया है। अब, आइए देखें कि इन वाचाओं में शामिल सच्चे विश्वासी परमेश्वर के साथ संबंध के प्रभावों का कैसे अनुभव करते हैं।

विश्वासियों का शामिल किया जाना

सच्चे विश्वासियों पर किया गया ईश्वरीय उपकार अतुलनीय है, जिसमें पापों की क्षमा और परमेश्वर के साथ अनंत संगति शामिल है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 8:1-2 में लिखा :

> अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया (रोमियों 8:1-2)।

> परमेश्वर हमसे इस हद तक प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र को हमारे पापों की कीमत चुकाने, हमारे स्थान पर कष्ट सहने और हमें उस दंड से बचाने के लिए भेजा है जो हम अपने पर लेकर आए हैं...अतः इससे हमें बहुत प्रोत्साहन मिलना चाहिए। वास्तव में, पौलुस रोमियों 8 में इस बात को लेता है और हमें इन शब्दों के साथ प्रोत्साहित करता है : वह कहता है, "जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?" और इसलिए, परमेश्वर ने निश्चित रूप से और पूरी तरह से और अंत में हमें दिखाया है कि वह अपने पुत्र को देने के द्वारा हमसे कितना प्रेम करता है। अतः हमें उस पर भरोसा करना चाहिए और आश्वस्त रहना चाहिए कि वह सचमुच हमसे प्रेम करता है।
>
> — डॉ. ब्रैंडन डी. क्रो

साथ ही, जबकि हम परमेश्वर की व्यवस्था के दंड से आजाद हैं, फिर भी परमेश्वर ने मसीह में हमारे लिए जो किया है, उसके लिए हमें धन्यवादी मन के साथ परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवा के लिए बुलाया गया है। इसी कारण, रोमियों 8:7 में पौलुस ने इन वचनों को कहते हुए विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच अंतर स्पष्ट किया :

> क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि यह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न हो सकता है (रोमियों 8:7)।

इसके विपरीत, वह मन जो परमेश्वर से प्रेम करता है वह उसकी व्यवस्था के प्रति समर्पित होता है। इसलिए रोमियों 8:12-13 में पौलुस ने ये वचन जोड़े :

> इसलिये हे भाइयो, हम... देह की क्रियाओं को [मार डालें] (रोमियों 8:12-13)।

विश्वासियों की जिम्मेदारी है कि वे अविश्वासियों से भिन्न जीवन जीएँ। अर्थात्, उनकी जिम्मेदारी है कि वे परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति समर्पित रहें — उद्धार पाने के लिए नहीं, बल्कि उस उद्धार के लिए परमेश्वर का आदर करने हेतु जो उसने अपने अनुग्रह से दिया है।

पुराने नियम के इस्राएलियों के समान, मसीहियों को भी अपने विश्वास को परखने और प्रमाणित करने के लिए पवित्रशास्त्र के नियमों और विधियों का पालन करना चाहिए। पुराने नियम में सच्चे विश्वासियों को उनके विश्वास की परख के रूप में मूसा की व्यवस्था का पालन करने के लिए बुलाया गया था। नए नियम में मसीहियों को उसी तरह की परख के लिए बुलाया गया है। जैसा कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 13:5 में कुरिन्थुस के लोगों से कहा :

> अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप को जाँचो। क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जाँच में निकम्मे निकले हो (2 कुरिन्थियों 13:5)।

मसीह परमेश्वर का पूर्ण आज्ञाकारी पुत्र था, और उसकी धार्मिकता हमें प्रदान की गई है ताकि हमारा अनंत उद्धार सुरक्षित रहे। लेकिन जब हम अपना प्रतिदिन का जीवन जीते हैं, तो हमें उस उद्धार को प्रमाणित करना होता है जो परमेश्वर ने हमें दिया है। जैसा कि पौलुस ने फिलिप्पियों 2:12 में उन्हें प्रोत्साहित किया :

> डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ (फिलिप्पियों 2:12)।

जैसा कि हमें अपेक्षा करनी चाहिए, इस्राएल की राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा के सच्चे विश्वासी भी विभिन्न तरीकों से आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता के परिणामों का अनुभव करते हैं। एक ओर, जैसा कि परमेश्वर अपनी बुद्धि में निर्धारित करता है, सच्चे विश्वासी अस्थायी आशीषों का अनुभव करते हैं। हमें परमेश्वर की आत्मा की अनेक आशीषें प्रदान की गई हैं। और इसके अलावा, परमेश्वर अक्सर अपने लोगों को भौतिक आशीषें भी देता है। लेकिन इसके विपरीत भी होता है। परमेश्वर अपने सच्चे बच्चों को अनुशासित करने के द्वारा सिखाता है। इब्रानियों 12:6 में जब लेखक ने इसे इस प्रकार समझाया तो उसने पुराने नियम का उल्लेख किया :

> प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है (इब्रानियों 12:6)।

इस जीवन में सच्चे विश्वासियों के लिए अस्थायी आशीषों और शापों के इन मिश्रित अनुभवों के बावजूद, अविश्वासियों और विश्वासियों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है। जब मसीह का महिमा में पुनरागमन होगा, तो सच्चे विश्वासी केवल परमेश्वर की अनंत आशीषों का अनुभव प्राप्त करेंगे। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 21:7 में पढ़ते हैं :

> जो जय पाए वही इन वस्तुओं का वारिस होगा, और मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा (प्रकाशितवाक्य 21:7)।

जब हम पुराने नियम का अध्ययन करना जारी रखते हैं, तो यह आवश्यक है कि हम मनुष्यजाति के इन तीन विभाजनों को हमेशा याद रखें और कि कैसे वाचा के प्रभाव उन पर लागू होते हैं। राष्ट्रीय वाचाओं और नई वाचा के बाहर के अविश्वासियों, इन वाचाओं के भीतर के अविश्वासियों और इन वाचाओं के भीतर के सच्चे विश्वासियों के बीच अंतर को याद रखना हमें उन प्राचीन इस्राएलियों के लिए पुराने नियम के अर्थों को समझने में सहायता करेगा जिन्होंने इसे सबसे पहले पढ़ा था। और हम यह देखने के लिए बेहतर रीति से तैयार होंगे कि यह आज हम पर कैसे लागू होता है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने ईश्वरीय वाचाओं की बाइबल-आधारित अवधारणा का परिचय दिया है। हमने देखा है कि परमेश्वर अपने राज्य का संचालन वाचाओं के द्वारा करता है। हमने बाइबल के इतिहास को भी देखा है और सीखा है कि आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, और दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचाओं तथा नई वाचा ने अलग-अलग समयों के लिए परमेश्वर के राज्य की नीतियों पर बल दिया है। इसके अतिरिक्त, हमने ईश्वरीय उपकार, मानवीय विश्वासयोग्यता और आशीषों तथा शापों के परिणामों के बुनियादी प्रभावों का भी अध्ययन किया है जो हर वाचाई अवधि में परमेश्वर और उसके वाचा के लोगों के बीच संबंधों को दर्शाते हैं। और अंत में, हमने देखा है कि ये प्रभाव संपूर्ण पवित्रशास्त्र और आज भी विभिन्न प्रकार के लोगों पर कैसे लागू होते हैं।

पुराने नियम को समझने के लिए ईश्वरीय वाचाओं के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर बताना कठिन होगा। बाइबल का प्रत्येक लेखक जानता था कि परमेश्वर ने अपने राज्य का संचालन वाचाओं के द्वारा किया। और फलस्वरूप, पुराने नियम के प्रत्येक पृष्ठ की प्रत्येक शिक्षा का महत्व परमेश्वर की वाचाओं की संरचना में निहित है। हम उस मसीह की सेवा करते हैं जो नई वाचा को लेकर आया है। और उसके अनुयायियों के रूप में, हमें पुराने नियम की परमेश्वर की वाचाओं से वह सब कुछ सीखना चाहिए जो हम सीख सकते हैं ताकि हम इस युग में उसके लिए जी सकें। बाइबल की ईश्वरीय वाचाओं की नीतियों के प्रति हमारे समर्पण को नया बनाने के द्वारा हमें मसीह के साथ उसके राज्य की पूर्णता में अनंत जीवन प्राप्त होगा।